वर्ष: 3 अंक: 5

न्यू इंडिया समाचार

1-15 सितंबर, 2022 (निःशुल्क)

अमृत ध्येय...

कर्तव्य पथ ही जीवन पथ

लाल किले की प्राचीर से पीएम नरेंद्र मोदी ने दिया 'पंच प्रण' का मंत्र, 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का संकल्प...

नवजागरण का अमृत काल

कोविड काल के बीच आजादी के 76वें पर्व पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से तिरंगा फहरा कर देशवासियों के सामने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की अमृत यात्रा का संकल्प रखा।

स्वतंत्रता दिवस के आयोजन का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

न्यू इंडिया
समाचार

वर्ष: 03, अंक: 05 | 1-15 सितंबर, 2022

प्रधान संपादक
सत्येन्द्र प्रकाश,
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय , नई दिल्ली

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
विभोर शर्मा
सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
जय प्रकाश गुप्ता (अंग्रेजी)
अनिल पटेल (गुजराती)
नदीम अहमद (उर्दू)
पॉलमी रक्षित (बंगाली)
हरिहर पंडा (ओड़िया)

सीनियर डिजाइनर
श्याम शंकर तिवारी
रविन्द्र कुमार शर्मा
डिजाइनर
दिव्या तलवार, अभय गुप्ता

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx
न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

'न्यू इंडिया समाचार' के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें:- @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर

...ताकि विकसित देश बने भारत

आवरण कथा

76वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 83 मिनट के संबोधन में किया उपलब्धियों का जिक्र तो अगले 25 साल में विकसित भारत बनाने का दोहराया संकल्प। 14-30

टोक्यो से बर्मिंघम तक स्वर्णिम इतिहास

ओलंपिक के बाद अब राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने रचा इतिहास।
46-48

दूसरों के लिए प्रेरणा बन गई जिनकी संकल्प शक्ति

आजादी के अमृत महोत्सव में राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले नायकों की कहानी।
49-52

समाचार सार। 4-5

"शिक्षक का काम पीढ़ियों को बनाना, पीढ़ियों को बढ़ाना है"
शिक्षक दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषणों पर आधारित आलेख। 6-8

सीने पर गोली खाकर भी जो मैदान में डटे रहे
व्यक्तित्व के अतंर्गत इस बार पढ़िए कहानी परमवीर मेजर परमेश्वरन की। 9

किसान पुत्र से भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक तक का सफर
पढ़िए भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की जीवन यात्रा। 10-11

भारतीयता का उत्सव और राष्ट्र की प्रगति
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति का संबोधन। 12-13

पीएम आवास योजना (शहरी) अब 2024 तक रहेगी जारी
कैबिनेट की बैठक में महत्वपूर्ण फैसले । 31

गुजरात के विकास में जुड़े नए आयाम
प्रधानमंत्री मोदी के गुजरात दौरे से मिली कई सौगातें। 32-33

स्वच्छ वातावरण समृद्ध किसान, जैव ईंधन बेहतर समाधान
पानीपत में 2जी इथेनॉल संयंत्र राष्ट्र को समर्पित। 34-35

विकास यात्रा को सार्थक बना रहा सहकारी संघवाद
नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक। 36-37

वैश्विक मंदी के साये में दुनिया, मजबूती से बढ़ रहा भारत
ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में भारत अकेला देश जो मंदी से दूर । 38-39

मछली उत्पादन में तेजी से बढ़ते कदम
पीएम मत्स्य संपदा योजना से मछली पालक हो रहे लाभान्वित। 40-41

अब सुरक्षित भविष्य की गारंटी
किसान, व्यापारी और स्वरोजगार करने वालों के लिए पेंशन योजनाएं । 42-43

पीएम मोदी राजनीति और राष्ट्रनीति के आदर्श
मोदी@20 के ओडिशा चैप्टर पर गृहमंत्री अमित शाह का संबोधन । 44-45

प्रकाशक और मुद्रक- मनीष देसाई , महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो **मुद्रण:** इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, एफबीडी वन कॉर्पोरेट पार्क, 10वीं मंजिल, नई दिल्ली-फरीदाबाद बॉर्डर, एनएच-1, फरीदाबाद-121003। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003। **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

सादर नमस्कार।

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने और 76वें वर्ष में प्रवेश पर लाल किले की प्राचीर से लेकर देश के कोने-कोने में हमारी आन-बान-शान तिरंगा का लहराना। यह अद्भुत नजारा कुछ उसी तरह का था जैसा स्वाधीनता संघर्ष की गाथा को संजोए देश ने 75 वर्ष पहले देखा था। ऐसे में लाल किले की प्राचीर से 9वीं बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन में आज के भारत की विकास यात्रा का स्वाभाविक पुट था, तो भविष्य के भारत का संकल्प भी संजोया गया था। ऐसे आत्मनिर्भर भारत का सपना जिसमें राष्ट्र के जन-जन की भागीदारी हो, आत्मीयता हो, शांति-भाईचारे का संदेश हो और विश्व पटल पर छा जाने की दृढ़ इच्छाशक्ति हो, एक मजबूत संकल्प हो, उस नए भारत के संकल्प को साकार करने के लिए ही राष्ट्र ने अपनी आजादी के 75वें वर्ष से अगले 25 वर्षों की अमृत यात्रा शुरू की है।

अमृत यात्रा से आत्मनिर्भरता का लाल किले की प्राचीर से निकला संदेश ही इस बार की हमारी आवरण कथा बनी है। साथ में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का राष्ट्र के नाम पहला संबोधन भी शामिल है। दुनिया की अर्थव्यवस्था प्रभावित होने के बावजूद किस तरह विभिन्न वैश्विक एजेंसियां यह बता रही हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था अपनी मजबूत स्थिति में है, इसको भी इस अंक में प्रमुखता से रखा गया है। व्यक्तित्व की कड़ी में परमवीर चक्र विजेता मेजर रामास्वामी परमेश्वरन की वीर गाथा, फ्लैगशिप योजनाओं में इस बार प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना और किसान उत्थान से जुड़े पीएम किसान मानधन, किसान और छोटे व्यापारियों के लिए पेंशन योजना इस अंक में शामिल है।

देश के महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती 5 सितंबर शिक्षक दिवस के रूप में मनाई जाती है, जिन्होंने राजनेता से ज्यादा खुद को शिक्षक कहलाना पसंद किया। इसी आलोक में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया का ग्लोबल हब बनाने की दूरगामी सोच को बताता प्रधानमंत्री के संबोधनों पर आधारित विशेष आलेख शामिल हैं। खेल की दुनिया में भारत ने किस तरह परचम लहराया, अमृत महोत्सव की कड़ी में महानायकों की कहानी के साथ-साथ 75 वर्ष की विकास यात्रा को बताने की श्रृंखला भी इस अंक से शुरू हो रही है।

भारत अपनी विकास यात्रा में नित नए कीर्तिमान रच रहा है और 2047 में जब आजादी का शताब्दी समारोह मनाया जाएगा तब 'सबका प्रयास' से शुरू हुई अमृत यात्रा, अमृत संकल्प के साथ नए भारत के निर्माण का साक्षी बनेगी।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध
पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

सत्येन्द्र प्रकाश

आपकी बात...

बहुत पसंद है हमें यह पत्रिका

देशहित एवं भारत सरकार के द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हमें 'न्यू इंडिया समाचार' पत्रिका के माध्यम से मिलती है। यह पत्रिका हमें बहुत पसंद है। यह पत्रिका बहुत ही अच्छी और ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ प्रकाशित की जा रही है जो सराहनीय है।

nlgurjar@gmail.com

पढ़ने में अच्छा लगता है न्यू इंडिया समाचार

न्यू इंडिया समाचार का 1-15 अगस्त का अंक मिला। इस अंक का कवर पेज बहुत ही आकर्षक लगा। इस अंक में प्रकाशित कवर स्टोरी के अलावा अन्य स्टोरी भी पढ़ने में काफी रोचक लगी। इस पत्रिका में स्टोरी बहुत बेहतर तरीके से लिखी जाती है जो पढ़ने में अच्छा लगता है।

abhaychaudhary.clinic@gmail.com

स्वतंत्रता सेनानियों की शौर्यगाथा पढ़ कर हो उठा रोमांचित

'अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' शीर्षक से प्रकाशित कवर स्टोरी बेहद शानदार लगी। इसके अलावा न्यू इंडिया समाचार के 1 से 15 अगस्त के अंक में लिखी गई अन्य स्टोरी भी अच्छी लगी। आजादी के अमृत महोत्सव में इस बार के स्वतंत्रता सेनानियों की शौर्यगाथा पढ़ कर रोमांचित हो उठा।

anuragmishrabhu@gmail.com

एक संपूर्ण पत्रिका है न्यू इंडिया समाचार

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका अपने आप में एक संपूर्ण पत्रिका है। इस पत्रिका के माध्यम से प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों को बहुत मदद मिलती है। मुझे इस पत्रिका का ब्रेसब्री से इंतजार रहता है। इसमें प्रकाशित आलेख बहुत बेहतर तरीके से लिखे होते हैं।

snehasurabhi5@gmail.com

निश्चित रूप से भारत दुनिया में शीर्ष पर होगा

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में 130 करोड़ देशवासियों को साथ लेकर और उनके साथ जुड़कर आजादी के 75वें वर्ष को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाना शुरू किया। अगले 25 वर्षों के लिए 'अमृत काल' का नाम देकर 'अमृत यात्रा' शुरू की गई है। 'न्यू इंडिया समाचार' पत्रिका के 1-15 अगस्त के अंक में यह सब पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ। जिस तरह से पीएम मोदी देश को फिर से परिभाषित करने के लिए नई पहल, कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं के साथ भविष्य की योजना को आकार दे रहे हैं, ऐसे में हम 2047 में स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मनाएंगे, तो निश्चित रूप से भारत दुनिया में शीर्ष पर होगा। shaktisinghadv@gmail.com

हमें फॉलो करें @NISPIBIndia

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003। ईमेल- response-nis@pib.gov.in

भारत के 'तेजस' को खरीदना चाहते हैं दुनिया के कई देश

1965 के युद्ध में पाकिस्तानी एयरफोर्स के अचानक किए हमले में भारत के कई फाइटर जेट धराशायी हो गए थे। यही नहीं, लड़ाकू विमानों में जीपीएस और रडार नहीं लगे होने की वजह से स्क्वॉड्रन लीडर विलियम ग्रीन भारत की बजाय पाकिस्तान में लैंड कर गए थे। यह वह वक्त था जब भारत दूसरे देशों से फाइटर जेट खरीद रहा था। अब वक्त बदला है जब रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंत्र के साथ भारत दुनिया के टॉप 25 रक्षा उत्पाद निर्यातकों में शामिल हो चुका है। भारत के स्वदेशी जेट विमान तेजस की डिमांड पूरी दुनिया में हो रही है। दुनिया के बड़े-बड़े देशों ने इसे खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और फिलीपींस समेत छह देशों ने भारत के तेजस विमान में रुचि दिखाई है। वहीं मलेशिया पहले ही इस विमान को खरीदने की तैयारी में है। भारत ने मलेशिया को 18 तेजस बेचने की पेशकश की है। लोकसभा में एक लिखित प्रश्न का उत्तर में रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट ने यह जानकारी दी। इसके अनुसार अर्जेंटीना और मिस्र ने भी तेजस विमानों में दिलचस्पी दिखाई है। गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना 83 तेजस विमानों के लिए पहले ही हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ करार कर चुकी है।

पीएमजी दिशा में 5.24 करोड़ प्रशिक्षित, लक्ष्य से ज्यादा नामांकन

डिजिटल अर्थव्यवस्था की तरफ भारत के बढ़ते कदम को मजबूती देने के लिए मार्च, 2023 तक 6 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से प्रति परिवार कम से कम एक व्यक्ति को पीएमजी दिशा के तहत डिजिटल साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अंतर्गत 22 जुलाई, 2022 तक 6.15 करोड़ से अधिक उम्मीदवारों ने नामांकन कराया है। इतना ही नहीं इनमें से 5.24 करोड़ उम्मीदवारों को प्रशिक्षित व 3.89 करोड़ उम्मीदवारों को विधिवत प्रमाणित भी किया गया है। यह जानकारी इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने राज्यसभा में दी है। ग्रामीण भारत में डिजिटल साक्षरता की शुरुआत करने के लिए फरवरी, 2017 में केंद्रीय कैबिनेट ने प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (पीएमजी दिशा) को मंजूरी दी थी।

6 करोड़ से अधिक लोगों ने तिरंगा के साथ अपलोड की सेल्फी

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने और 76वें स्वतंत्रता दिवस पर पूरे देश में क्या शहर, क्या गांव, हर तरफ तिरंगा लहराता दिखा। कई ऐसे मकान दिखे जिसमें एक नहीं, बल्कि कई तिरंगे फहराए गए। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 13-15 अगस्त के बीच चले 'हर घर तिरंगा' अभियान में 6.10 करोड़ लोगों ने तिरंगे के साथ harghartiranga.com पर सेल्फी अपलोड की है। इतना ही नहीं 5 करोड़ से अधिक लोगों ने डिजिटल झंडा भी वेबसाइट पर फहराया। भारत और हर भारतवासी के लिए आन-बान-शान के प्रतीक तिरंगे के साथ सेल्फी अपलोड करने वालों में गृहमंत्री अमित शाह, सचिन तेंदुलकर, अमिताभ बच्चन और रजनीकांत और सोनू सूद जैसी नामचीन हस्तियां थी तो नन्हें बच्चों की सेल्फी भी अपलोड थी।

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में पहली बार भारत के 42 संस्थान

हमारे युवा अब शिक्षित होने के साथ कौशल से युक्त हों, आत्मविश्वास से भरे हों, व्यवहारिक हों...भारत अब इसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। शिक्षा में सुधार को लेकर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भले ही वर्ष 2020 में आई है, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की यह मुहिम 2014 में ही शुरू हो गई थी। यही वजह है कि पिछले 8 सालों में विश्वविद्यालयों से लेकर कॉलेज और स्कूली इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूती देने में काफी काम हुआ है। 7 नए आईआईएम, 7 नए आईआईटी, मेडिकल कॉलेजों में करीब दोगुनी सीटें, तीन गुना एम्स के साथ 8 वर्ष में 320 नए विश्वविद्यालय के साथ उच्च शिक्षा का संपूर्ण ढांचा मजबूत करने का जो प्रयास केंद्र सरकार ने किया है, अब उसकी बानगी वैश्विक स्तर पर भी मिल रही है। विश्वविद्यालयों की क्वाक्वेरेली साइमंड्स (क्यूएस) विश्व रैंकिंग 2023 में भारत के 41 संस्थानों ने वैश्विक स्तर पर शीर्ष 1422 में जगह बनाई है। इनमें से 7 संस्थानों को पहली बार इस सूची में जगह मिली है। 2014 में इस सूची में भारत के केवल 12 संस्थान शामिल थे। इस वर्ष इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस देश का शीर्ष संस्थान बना है। पिछले वर्ष के मुकाबले इसकी वैश्विक रैंकिंग में 31 स्थान का सुधार हुआ है। इसके बाद आईआईटी बॉम्बे और आईआईटी दिल्ली ने दुनिया के शीर्ष 200 संस्थानों में जगह बनाई है।

खुद का डोपिंग रोधी कानून बना भारत दुनिया के चुनिंदा देशों में

खेल और खिलाड़ी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल रहे हैं। खेलों के लिए मजबूत ढांचे से लेकर खिलाड़ियों को विश्व स्तरीय सुविधाएं और प्रशिक्षण का असर टोक्यो ओलंपिक से लेकर कॉमनवेल्थ खेल के साथ तमाम वैश्विक मंचों पर बेहतरीन प्रदर्शन के रूप में सामने आया है। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए अब भारत ने खुद के डोपिंग रोधी विधेयक 2021 को मंजूरी दे दी है। खेल एवं युवा मामलों के मंत्री के तौर पर अनुराग ठाकुर द्वारा यह संसद में पेश किया गया पहला विधेयक था। इससे खेल और खिलाड़ियों को तो मदद मिलेगी ही, साथ में आत्मनिर्भर भारत को भी बल मिलेगा। इसका सबसे बड़ा फायदा होगा कि खिलाड़ियों के डोपिंग टेस्ट के लिए भारत को किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं रहना होगा। इससे पहले डोप टेस्ट के लिए सैंपल किसी दूसरे देश में भेजा जाता रहा है, जहां सैंपल के साथ छेड़छाड़ की आशंका बनी रहती है। ऐसे में देश में इस कानून के लागू होने से अब ये टेस्ट भारत में ही संभव हो पाएगा और पैसों की भी बचत होगी। एंटी डोपिंग कानून बनाने के साथ ही भारत, अमेरिका, चीन, ऑस्ट्रेलिया और जापान जैसे देशों में शामिल हो गया है।

लक्ष्य से पहले 10 लाख छात्रों को पेटेंट के तरीकों का प्रशिक्षण

बौद्धिक सम्पदा भारत
पेटेंट | डिजाइन | व्यापार चिह्न |
भौगोलिक उपदर्शन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के बाद जय अनुसंधान का नारा दिया है। लेकिन देश अपने आविष्कारों से तभी लाभान्वित हो सकता है जब देश के शोधकर्ता और आविष्कारक पेटेंट कराने के उचित तरीके से अवगत हों। यही वजह है कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 8 दिसंबर, 2021 को शुरू राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरुकता मिशन (निपम) के तहत 15 अगस्त 2022 तक 10 लाख से अधिक छात्रों को पेटेंट संबंधित जागरुकता व प्रशिक्षण का लक्ष्य रखा। जिसे 15 दिन पहले 31 जुलाई को पाना भारत के बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में विश्वगुरु के रूप में दुनिया का नेतृत्व करने की दिशा में मजबूती से बढ़ते कदम के तौर पर देखा जा सकता है। बौद्धिक संपदा कार्यालय, पेटेंट, डिजाइन और ट्रेड मार्क महानियंत्रक कार्यालय एवं वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय इस कार्यक्रम को लागू कर रहा है। इसमें 28 राज्य और 7 केंद्र शासित प्रदेशों के 3662 शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं। देश को आत्मनिर्भर बनाए रखने के लिए आविष्कार करने के साथ-साथ इनका पेटेंट भी आवश्यक है। ●

“शिक्षक का काम पीढ़ियों को बनाना, पीढ़ियों को बढ़ाना है”

“शिक्षक वह नहीं होता जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उन्हें आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।” शिक्षक की उपयोगिता को लेकर यह विचार भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के हैं, जिन्हें हम राजनेता या राष्ट्रपति से अधिक शिक्षक के रूप में जानते हैं और उनकी जन्म जयंती 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। आज देश के करीब 15.09 लाख स्कूलों में 97 लाख शिक्षक 26.44 करोड़ से ज्यादा छात्रों के भविष्य की नींव गढ़ रहे हैं। इन छात्रों पर ही भारत के भविष्य का भार है तो इन शिक्षकों के कंधों पर उन्हें चुनौतियों के लिए तैयार करने की जिम्मेवारी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से लेकर केंद्र सरकार ने अनेक कार्यक्रमों के जरिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की नई शुरुआत की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद शिक्षकों की इस महती भूमिका का जिक्र अपने कई उद्बोधनों में कर चुके हैं। यही नहीं, परीक्षा पे चर्चा से लेकर तमाम आयोजनों के जरिए वे खुद लगातार छात्र और शिक्षकों से संवाद करते रहे हैं। इस बार शिक्षक दिवस के विशेष अवसर पर उनके भाषणों के अंश के रूप में पढ़िए शिक्षकों के लिए उनके आह्वान... साथ में कुछ ऐसे शिक्षकों के बारे में, जिन्होंने बनाई है एक नई मिसाल...

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन का 5 सितंबर को जन्मदिन है। देश इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। वे जीवन में किसी भी स्थान पर पहुंचे, लेकिन अपने आपको उन्होंने हमेशा शिक्षक के रूप में ही जीने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, “वो हमेशा कहते थे, अच्छा शिक्षक वही होता है जिसके भीतर का छात्र कभी मरता नहीं है।” शिक्षक कभी उम्र से बंधा नहीं होता, शिक्षक कभी रिटायर हो ही नहीं सकता। विद्यार्थी का शिक्षक के प्रति आदर, शिक्षक का शिक्षा के प्रति समर्पण और विद्यार्थी व शिक्षक के बीच में एक अपनत्व का भाव, यही एक जोड़ी होती है जो न केवल ज्ञान परोसती है बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाती है और सपने संजोने की आदत भी बनाती है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है- “दृष्टान्तो नैव दृष्टः त्रि-भुवन जठरे, सद्गुरोः ज्ञान दातुः” अर्थात्, पूरे ब्रह्मांड में गुरु की कोई उपमा नहीं होती, कोई बराबरी नहीं होती। जो काम गुरु कर सकता है, वो कोई नहीं कर सकता। हमारे शिक्षक अपने काम को केवल एक पेशा नहीं मानते, उनके लिए पढ़ाना एक मानवीय संवेदना है, एक पवित्र और नैतिक कर्तव्य है। इसीलिए, हमारे यहां शिक्षक और बच्चों के बीच प्रोफेशनल रिश्ता नहीं होता,

बल्कि एक पारिवारिक रिश्ता होता है। ये रिश्ता, ये संबंध पूरे जीवन का होता है। इसीलिए, आज देश अपने युवाओं के लिए शिक्षा से जुड़े जो भी प्रयास कर रहा है, उसकी बागडोर हमारे इन शिक्षक भाई-बहनों के ही हाथों में है। मैं शिक्षक दिवस पर देश के सभी गुरुजनों को नमन करता हूं और सभी शिक्षकों से अपेक्षा करता हूं, हमारा काम है पीढ़ियों को बनाना, पीढ़ियों को बढ़ाना, वही देश को बढ़ाएंगे। उस काम को सब मिलकर करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हर स्टेज पर शिक्षक सक्रिय हिस्सा

किसी भी छात्र की पूरी पढ़ाई में उसके जीवन में बड़ी प्रेरणा उसके अध्यापक होते हैं। हमारे यहां कहा जाता है- गुरौ न प्राप्यते यत्तन्नान्यत्रापि हि लभ्यते। गुरुप्रसादात सर्वं तु प्राप्नोत्येव न संशयः।। अर्थात जो गुरु से प्राप्त नहीं हो सकता, वो कहीं प्राप्त नहीं हो सकता। यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जो एक अच्छा गुरु मिलने के बाद दुर्लभ हो। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के फार्मुलेशन से इंप्लीमेंटेशन तक हर स्टेज पर शिक्षक सक्रिय हिस्सा हैं।

सरकार का निष्ठा 2.0 प्रोग्राम और 'निष्ठा 3.0' इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सभी शिक्षक, शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक अनुभव रखते हैं इसलिए प्रयास करेंगे तो आपके प्रयास राष्ट्र को बहुत आगे लेकर जाएंगे। मैं मानता हूं कि इस कालखंड में हम जिस भी भूमिका में हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम इतने बड़े बदलावों के गवाह बन रहे हैं, इन बदलाव में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। आपके जीवन में ये स्वर्णिम अवसर आया है कि आप देश के भविष्य का निर्माण करेंगे। भविष्य की रूपरेखा अपने हाथों से खींचेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में जैसे जैसे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अलग-अलग फीचर हकीकत में बदलेंगे, हमारा देश एक नए युग का साक्षात्कार करेगा। जैसे-जैसे हम अपने युवा को एक आधुनिक और राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था से जोड़ते जाएंगे। देश आजादी के अमृत संकल्पों को हासिल करता जाएगा।

प्लेन चाहे कितना भी एडवांस हो, उड़ाता पायलट ही है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की इस यात्रा के पथप्रदर्शक देश के शिक्षक हैं। चाहे नए तरीके से लर्निंग हो, चाहे 'परख' के जरिए नई परीक्षा हो, छात्रों को इस नई यात्रा पर लेकर शिक्षकों को ही जाना है। क्योंकि, प्लेन कितना भी एडवांस क्यों न हो, उड़ाता पायलट ही है। इसलिए, ये सभी शिक्षकों को भी काफी कुछ नया लर्न करना है, काफी कुछ पुराना अनलर्न भी करना है।

जीवन यात्रा में किसी न किसी शिक्षक की आती है याद

हम सब अपने जीवन की सफलताओं, जीवन यात्रा को देखते हैं तो हमें किसी न किसी शिक्षक की याद जरूर आती है। कोरोना काल में हमारे शिक्षकों के सामने बदलाव की चुनौतियां आईं, शिक्षकों ने इस चुनौती को न सिर्फ स्वीकार किया बल्कि उसे अवसर में बदल भी दिया है। पढ़ाई में तकनीक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कैसे हो, नए तरीकों को कैसे अपनाए, छात्रों को मदद कैसे करें, ये हमारे शिक्षकों ने सहजता से अपनाया है और अपने छात्रों को भी सिखाया है। मुझे भरोसा है जिस तरह देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिये एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है, हमारे शिक्षक इसका भी लाभ छात्रों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाएंगे।

नहीं होना चाहिए बच्चों में कोई भेदभाव

सचमुच अगर एक शिक्षक के रूप में देखूं तो बच्चों में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। सभी छात्रों में गुण और अवगुण होता है। शिक्षक का काम होता है, छात्र की अच्छाइयों को समझना। उसको तराशना। उसके जीवन को, वे जैसे भी हैं उसको आगे ले जाने का अवसर देना। शिक्षक सिर्फ ब्रिलियेंट पर ध्यान दें, ऐसा नहीं कर सकता है। घर में माता-पिता अपने सभी बच्चों पर बराबर ध्यान देते हैं। वैसे ही शिक्षक के लिए भी कोई आगे, कोई पीछे, कोई ऊपर, कोई नीचे नहीं होता। सबके सब अपने होते हैं। हरेक के गुणों को जानना चाहिए। शिक्षक क्लास में सभी बच्चों के हिसाब से वाक्यों का भी प्रयोग करता है, सबको समान परोसने की कोशिश करता है।

पढ़ाई से जोड़ने के लिए शिक्षकों का अपना-अपना "जॉलीवुड"

शिक्षक आजीवन ज्ञानधारा से जुड़े रहते हैं। वह कार्य से निवृत्त हो सकते हैं, लेकिन शिक्षा कार्य से कभी नहीं। क्योंकि पढ़ाई से लेकर करियर तक, हर जगह एक शिक्षक, एक गाइड की जरूरत होती है। गुरु और शिष्य की प्राचीन परंपरा की तरह ही कुछ शिक्षक किताबी पढ़ाई से आगे बढ़कर छात्रों को भविष्य की चुनौतियों से जूझने और विजय पाने के लिए तैयार करते हैं तो कुछ पढ़ाई के साथ पर्यावरण, खेल और रोजमर्रा की जरूरतों से जोड़कर अपने-अपने "जॉलीवुड" स्टाइल यानी ज्वॉयफुल लर्निंग इन चाइल्डहुड से भविष्य के पौध को सींच रहे हैं। शिक्षक दिवस पर ऐसे ही कुछ राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत शिक्षकों से आपको करा रहे हैं रूबरू...

खुर्शीद कुतुबुद्दीन शेख
गढ़चिरौली-महाराष्ट्र

'मैं भी रिपोर्टर' से भाषा की चुनौती की दूर

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के छोटे से गांव असार अली के जिला प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षक खुर्शीद कुतुबुद्दीन शेख अपनी क्रिएटिवटी से लगातार इस आदिवासी क्षेत्र के बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। सीमावर्ती इलाके में भाषा चुनौती थी जिसे खुर्शीद कुतुबुद्दीन शेख ने 'मैं भी रिपोर्टर' नाम की एक्टिविटीज से दूर करना शुरू किया। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए बच्चों को लेकर कई वीडियो बनाए। शेख कहते हैं जैसे कि दुनिया में हॉलीवुड, भारत में बॉलीवुड है तो मेरी पाठशाला में था जॉलीवुड। जॉलीवुड माने-ज्वॉयफुल लर्निंग इन चाइल्डहुड।

जय सिंह
झुंझुनू, राजस्थान

सरकारी योजनाएं-स्थानीय सहयोग से स्टेडियम तैयार

झुंझुनू जिले के छोटे से शहर सूरजगढ़ के शास्त्रीय उच्चतर विद्यालय में बतौर खेल शिक्षक 2015 में आए जय सिंह ने बच्चों को स्कूल में खेल सुविधा मिले, प्रशिक्षण के लिए बाहर न जाना पड़े, इसलिए सरकार की अलग-अलग योजनाओं व सबके सहयोग से बहुत जल्दी वहां राष्ट्रीय स्तर का मैदान तैयार करवा लिया। उस मैदान में एक एथलेटिक ट्रैक, फ्लड लाइट से युक्त 4 बॉलीबॉल के कोर्ट बनवाएं। ट्रेनिंग के उपकरण भी वहां जुटाए, जहां आज बच्चे अच्छी ट्रेनिंग कर रहे हैं। इसी का परिणाम है कि सूरजगढ़ के कई बच्चे राष्ट्रीय स्तर तक की खेल प्रतियोगिताओं में परचम लहराकर आए हैं।

जयसुंदर वी
मानापेट-पुडुचेरी

नई सोच और नई खोज की परंपरा कर रहे हैं विकसित

पुडुचेरी के मानापेट के गवर्नमेंट मीडिल स्कूल के अध्यापक जयसुंदर वी को विज्ञान से प्रेम है। नई सोच और नई खोज की परंपरा छात्रों में विकसित करना इनका लक्ष्य है। इसलिए अपने छात्र छात्राओं को नए आइडिया और प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। जयसुंदर वी कहते हैं- मेरा मकसद है कि मैं देश के लिए भविष्य के वैज्ञानिक तैयार करूं। इसके लिए बच्चों में विज्ञान के प्रति उत्सुकता जगाना जरूरी है। इनके कुछ छात्रों का चयन राष्ट्रीय स्तर के इंस्पॉयर मानक अवार्ड में भी हो चुका है।

इन्हें भी जानें

पर्यावरण से प्रेम, खिलौनों से विज्ञान के जरिए शिक्षा

राजकोट, गुजरात के विनोबा भावे स्कूल की प्रधानाचार्या वनिता दयाभाई राठौर अपने छात्रों में पढ़ाई के साथ पर्यावरण को सींचने का काम कर रही हैं। छत्तीसगढ़ के बस्तर के एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल में अंग्रेजी के लेक्चरर प्रमोद कुमार शुक्ला ने आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी में सक्षम बनाया है। नागालैंड के जाखमा गांव के गवर्नमेंट मीडिल स्कूल की मुख्य अध्यापिका स्वेदेशुनाओ जाओ ने बच्चों को घर-घर जाकर पढ़ाई का महत्व समझाया। बच्चों को पढ़ाने के लिए आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग को अपनाया है। स्कूलऔर क्लासरूम की दीवारों को भी किताब की तरह बना दिया।

सीने पर गोली खाकर भी जो डटे रहे मैदान में

भारतीय सेना ने अप्रतिम शौर्य की चमक सिर्फ देश के भीतर या सीमाओं पर ही नहीं बिखेरी, बल्कि संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन से लेकर पड़ोसी श्रीलंका तक भारत के ये वीर बलिदान गाथा के साक्षी रहे हैं। इन्हीं में से एक परमवीर हैं मेजर रामास्वामी परमेश्वरन, जिन्होंने श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान अपने लक्ष्य को सीने पर गोली खाकर भी किया हासिल ...

जन्मः 13 सितंबर 1946 मृत्युः 25 नवंबर 1987

बात 1980 के दशक के अंत की है। श्रीलंका सिविल वॉर से जूझ रहा था। भारत-श्रीलंका समझौते के अनुसार, भारतीय सेना वहां शांति व कानून और व्यवस्था बहाल करने के लिए गई। श्रीलंका के अंदर भारतीय सेना द्वारा चलाए गए इस अभियान को 'ऑपरेशन पवन' के नाम से जाना जाता है। यह 1987 से 1990 तक चला। इस पूरे मिशन में यूं तो हर एक भारतीय जवान ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, मगर एक नाम ऐसा भी रहा, जिसे इस मिशन के दौरान अपनी बहादुरी के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया, वह कोई और नहीं मेजर रामास्वामी परमेश्वरन थे।

मेजर रामास्वामी परमेश्वरन 13 सितंबर, 1946 को महाराष्ट्र में पैदा हुए। स्कूल की पढ़ाई के बाद 1968 में साइंस से ग्रेजुएशन पूरी की और परमेश्वरन ने खुद को सेना के लिए तैयार किया। कहते हैं कि परमेश्वरन 1971 के युद्ध में पाकिस्तान के खिलाफ लड़ने वाले सैनिकों के बलिदान से बहुत प्रेरित थे। 1971 में वह ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकेडमी (ओटीए) पहुंचने में सफल रहे। वहां से पास होने के बाद 16 जून, 1972 को वो 15 महार रेजिमेंट में कमीशंड हुए और अधिकारी बने। उन्हें जो भी जिम्मेदारी मिलती, वह उसे बखूबी निभाते। मिजोरम और त्रिपुरा में उग्रवादी घटनाओं के खिलाफ कार्रवाई के दौरान उनकी सक्रियता इसके दो बड़े उदाहरण बने। इस दौरान उन्होंने अपनी कार्यशैली से सभी को प्रभावित किया। वह अपने वरिष्ठ अफसरों के प्रिय तो बने ही, अपने जूनियर और साथियों के बीच भी लोकप्रिय हो गए। प्यार से लोग उन्हें 'पेरी साहब' कहा करते थे। भारतीय सेना की ओर से परमेश्वरन 'ऑपरेशन पवन' के तहत श्रीलंका गए और वहां शांति बहाली में जुट गए। 25 नवंबर 1987 को ऑपरेशन पवन के दौरान जब मेजर रामास्वामी परमेश्वरन श्रीलंका में एक तलाशी अभियान से लौट रहे थे, तब उनके सैन्य दल पर आतंकवादियों के समूह द्वारा घात लगाकर आक्रमण किया गया।

धैर्य और सूझ-बूझ से उन्होंने आतंकवादियों को पीछे से घेरा और उन पर हमला कर दिया जिससे आतंकी पूरी तरह से स्तब्ध रह गए। आमने-सामने की लड़ाई में एक आतंकवादी ने उनके सीने में गोली मार दी। निडर होकर मेजर परमेश्वरन ने आतंकवादी से राइफल छीन ली और उसे मौत के घाट उतार दिया। गंभीर रूप से घायल अवस्था में भी वे निरंतर आदेश देते रहे और अपनी अंतिम सांस तक अपने साथियों को प्रेरित करते रहे। उनकी इस वीरतापूर्ण कार्रवाई के परिणाम स्वरूप पांच आतंकवादी मारे गए और भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया। मेजर रामास्वामी परमेश्वरन ने असाधारण शौर्य और प्रेरक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया, जिसके लिए उन्हें मरणोपरांत परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया। ●

नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

किसान पुत्र से भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक तक का सफर

यह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की खूबसूरती है कि ओडिशा के एक सुदूर आदिवासी गांव से निकलीं द्रौपदी मुर्मु ने 25 जुलाई को देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति के पद की शपथ ली तो उनके 16 दिन बाद ही राजस्थान के झुंझुनू जिले के एक छोटे से गांव के किसान परिवार में पले-बढ़े जगदीप धनखड़ ने देश के दूसरे शीर्ष पद यानी उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली...

भारतीय लोकतंत्र में कहने को राज्यपाल का पद राज्य शासन के सर्वोच्च के रूप में होता है, लेकिन अमूमन राज्यपाल सक्रिय व्यवस्था से अक्सर दूर ही रहते हैं। परंतु जगदीप धनखड़ का नाम ऐसे राज्यपाल के रूप में लंबे समय तक याद किया जाता रहेगा जो पश्चिम बंगाल में इस पद पर रहते हुए आम आदमी से जुड़े मुद्दों पर लगातार सक्रिय रहे हैं। वे राजभवन में समय बिताने की बजाय लोगों के हित और राज्य के सरोकार को इतनी अहमियत देते हैं कि बतौर राज्यपाल अपना पद संभालते ही पश्चिम बंगाल की नब्ज को समझने के लिए उन्होंने मात्र तीन महीने में ही करीब 1000 किताबें पढ़ डालीं।

राजस्थान के किसान परिवार में जन्म

उपराष्ट्रपति धनखड़ का जन्म 18 मई 1951 को राजस्थान के झुंझनू जिले के किठाना में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कक्षा 1 से 5 तक सरकारी प्राथमिक विद्यालय किठाना गांव में हुई। कक्षा 6 से उन्होंने 4-5 किलोमीटर दूर सरकारी मिडिल स्कूल घरधाना में प्रवेश लिया। वो गांव के अन्य छात्रों के साथ पैदल स्कूल जाते थे। 1962 में वे सैनिक स्कूल में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए। इसके बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रतिष्ठित महाराजा कॉलेज जयपुर में तीन साल के बीएससी (ऑनर्स) भौतिकी पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया और वहां से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

सिविल सर्विस छोड़ वकालत को चुना पेशा

12वीं के बाद इनका चयन आईआईटी और फिर एनडीए के लिए भी हुआ था, लेकिन नहीं गए। स्नातक के बाद उन्होंने देश की सबसे बड़ी सिविल सर्विसेज परीक्षा भी पास कर ली थी। हालांकि, आईएएस बनने की बजाय उन्होंने वकालत का पेशा चुना। उन्होंने अपनी वकालत की शुरुआत भी राजस्थान हाईकोर्ट से की थी। 1987 में वे राजस्थान उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन, जयपुर के अध्यक्ष के रूप में चुने गए सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। एक साल बाद, वे 1988 में राजस्थान बार काउंसिल के सदस्य भी बने। सुप्रीम कोर्ट में भी वकील के रूप में उन्होंने खुद को स्थापित

उपराष्ट्रपति के रूप में कार्यकाल पूरा होने पर वेंकैया नायडू का विदाई समारोह

हमें हमेशा उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए, जो वे सभी सांसदों से चाहते हैं: प्रधानमंत्री मोदी

निवर्तमान उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने 11 अगस्त 2017 को भारत के 13वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली थी और 5 साल का अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद उनके नाम कई उपलब्धियां जुड़ गई हैं। उनकी अध्यक्षता में 13 सत्रों के दौरान, राज्यसभा के कुल कामकाज का प्रतिशत जहां पहले पांच सत्रों में 42.77 था, वो बढ़कर अगले आठ सत्रों में 82.34 हो गया। मातृभाषाओं और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के पुरजोर समर्थन के रूप में उनके कार्यकाल में उच्च सदन की कार्यवाही में भारतीय भाषाओं के इस्तेमाल में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली। राज्यसभा में 1952 के बाद पहली बार डोंगरी, कोंकणी, कश्मीरी और संथाली भाषा का इस्तेमाल किया गया और राज्यसभा सचिवालय की ओर से एक साथ अनुवाद सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई। इसी तरह असमिया, बोडो, गुजराती, मैथिली, मणिपुरी और नेपाली भाषाओं का लंबे समय बाद राज्यसभा में इस्तेमाल किया गया। जब कोविड-19 महामारी ने दुनियाभर में जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था, संसद के कामकाज को सुचारू ढंग से चलाने के लिए निवर्तमान उपराष्ट्रपति नायडू के नेतृत्व में कई नई पहल की गई, जैसे संसदीय समितियों की रिपोर्ट वर्चुअल तरीके से पेश की गई। भारतीय मूल्यों से दृढ़ता से जुड़े होने के नाते उन्होंने कई औपनिवेशिक प्रथाओं को भी बंद करा दिया, जैसे 'मैं सदन के पटल पर रखने का निवेदन करता हूं' को बदलकर 'मैं दस्तावेज सभा पटल पर रखता हूं या यह कहने के लिए खड़ा हुआ हूं...' किया गया। भारत के लोकतांत्रिक लोकाचार पर जोर देते हुए पुराने हो चुके 'महामहिम' शब्द को भी 'माननीय उपराष्ट्रपति' से बदल दिया गया। उनके इन्हीं गुणों को याद करते हुए 8 अगस्त को आयोजित विदाई समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "हमें हमेशा उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए, जो वे सभी सांसदों से चाहते हैं।"

जगदीप धनखड़ को सभी दलों के भारी समर्थन से भारत का उपराष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई। मुझे विश्वास है कि वे एक उत्कृष्ट उपराष्ट्रपति होंगे। हमारे देश को उनकी बुद्धिमत्ता और ज्ञान से बहुत लाभ मिलेगा। ऐसे समय में जब भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, हमें किसान पुत्र के रूप में उपराष्ट्रपति मिलने पर गर्व है, जिनके पास उत्कृष्ट कानूनी ज्ञान और बौद्धिक कौशल मौजूद है। – नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

किया। वे राजस्थान ओलंपिक संघ व राजस्थान टेनिस संघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

लोकसभा सदस्य के रूप में सक्रिय राजनीति की शुरुआत

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने 1989 में झुंझुनू से लोकसभा चुनाव लड़ा और विजय हासिल की। 1990 से लेकर 1993 तक वे केन्द्र सरकार में संसदीय मामलों के राज्यमंत्री रहे। बाद में वे राजस्थान के अजमेर जिले के किशनगढ़ विधानसभा क्षेत्र से विधायक बने। उनके पास प्रशासनिक कार्यों का एक लंबा अनुभव रहा है। 2019 में उन्हें पश्चिम बंगाल का राज्यपाल बनाया गया था। 11 अगस्त को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें उपराष्ट्रपति की पद की शपथ दिलाई। ●

भारतीयता का उत्सव और राष्ट्र की प्रगति

एक राष्ट्र के लिए, विशेष रूप से भारत जैसे प्राचीन देश के लंबे इतिहास में, 75 वर्ष का समय बहुत छोटा प्रतीत होता है। देश ने 75 वर्ष के इस कालखंड में कई महत्वपूर्ण पड़ाव देखे हैं। 76वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने देश के नाम अपने पहले संबोधन में भारत की इसी विकास यात्रा का जिक्र किया तो आजादी के 100वें वर्ष में नया भारत कैसा हो, इस संकल्प की भी याद दिलाई। आदिवासी वर्ग से देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंचीं राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा, "जब हम स्वाधीनता दिवस मनाते हैं तो वास्तव में हम अपनी 'भारतीयता' का उत्सव मनाते हैं।" पढ़िए उनके संबोधन के अंश...

स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन

76वें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर देश-विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। 14 अगस्त के दिन को विभाजन-विभीषिका स्मृति-दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस दिन हमने अपनी नियति को नया स्वरूप देने का निर्णय लिया था। उस शुभ-दिवस की वर्षगांठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब एक स्वाधीन भारत में सांस ले सकें।

लोकतंत्र की जड़ें लगातार गहरी और मजबूत होती गईं

जब भारत स्वाधीन हुआ तो अनेक अंतरराष्ट्रीय नेताओं और विचारकों ने हमारी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की सफलता पर आशंका व्यक्त की थी। उनकी इस आशंका के कई कारण भी थे। उन दिनों लोकतंत्र आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों तक ही सीमित था।

स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थव्यवस्था तथा इनके साथ जुड़े अन्य क्षेत्रों में जो अच्छे बदलाव दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में सुशासन है।

विदेशी शासकों ने वर्षों तक भारत का शोषण किया था। इस कारण भारत के लोग गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे थे। लेकिन भारतवासियों ने उन लोगों की आशंकाओं को गलत साबित कर दिया। भारत की मिट्टी में लोकतंत्र की जड़ें लगातार गहरी और मजबूत होती गईं।

लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता से परिचित कराया

अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा था। लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया। प्रत्येक वयस्क नागरिक को राष्ट्र-निर्माण की सामूहिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

'आजादी का अमृत महोत्सव' जनता को समर्पित

'आजादी का अमृत महोत्सव' मार्च 2021 में दांडी यात्रा की स्मृति को फिर से जीवंत रूप देकर शुरू किया गया। उस युगांतरकारी आंदोलन ने हमारे संघर्ष को विश्व-पटल पर स्थापित किया। उसे सम्मान देकर हमारे इस महोत्सव की शुरुआत की गई। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है।

15 नवंबर 'जन-जातीय गौरव दिवस'

अनेक वीर योद्धाओं तथा उनके संघर्षों विशेषकर किसान और आदिवासी समुदाय के वीरों का योगदान एक लंबे समय तक सामूहिक स्मृति से बाहर रहा। पिछले वर्ष से हर 15 नवंबर को 'जन-जातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का सरकार का निर्णय स्वागत-योग्य है। हमारे जन-जातीय महानायक केवल स्थानीय या क्षेत्रीय प्रतीक नहीं हैं बल्कि वे पूरे देश के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

हमारी उपलब्धियां अनेक विकसित देशों से अधिक

हमने देश में ही निर्मित वैक्सीन के साथ मानव इतिहास का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया। पिछले महीने हमने 200 करोड़ वैक्सीन डोज का आंकड़ा पार कर लिया है। इस महामारी का सामना करने में हमारी उपलब्धियां विश्व के अनेक विकसित देशों से अधिक रही हैं। जब दुनिया कोरोना महामारी के गंभीर संकट के आर्थिक परिणामों से जूझ रही थी तब भारत ने स्वयं को संभाला और अब पुनः तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा है। इस समय भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही प्रमुख अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है।

मूल कर्तव्यों के बारे में जानें

भारत में आज संवेदनशीलता व करुणा के जीवन-मूल्यों को प्रमुखता दी जा रही है। इन जीवन-मूल्यों का मुख्य उद्देश्य हमारे वंचित, जरूरतमंद तथा समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों के कल्याण का कार्य करना है। हमारे राष्ट्रीय मूल्यों को, नागरिकों के मूल कर्तव्यों के रूप में, भारत के संविधान में समाहित किया गया है। देश के प्रत्येक नागरिक से मेरा अनुरोध है कि वे अपने मूल कर्तव्यों के बारे में जानें, उनका पालन करें, जिससे हमारा राष्ट्र नई ऊंचाइयों को छू सके।

हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 तक हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरी तरह साकार कर लेंगे।

बाधाओं को पार कर आगे बढ़ रही हैं महिलाएं

महिलाएं अनेक रूढ़ियों और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ रही हैं। सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी बढ़ती भागीदारी निर्णायक साबित होगी। आज हमारी पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या चौदह लाख से कहीं अधिक है। हमारे देश की बहुत सी उम्मीदें हमारी बेटियों पर टिकी हुई हैं। समुचित अवसर मिलने पर वे शानदार सफलता हासिल कर सकती हैं। हमारी बेटियां फाइटर पायलट से लेकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक होने तक हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

मातृभूमि के लिए सब कुछ अर्पण करने का लें संकल्प

आज जब हमारे पर्यावरण के सम्मुख नई-नई चुनौतियां आ रही हैं तब हमें भारत की सुंदरता से जुड़ी हर चीज का दृढ़तापूर्वक संरक्षण करना चाहिए। जल, मिट्टी और जैविक विविधता का संरक्षण हमारी भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा कर्तव्य है। हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारी मातृभूमि का दिया हुआ है। इसलिए हमें अपने देश की सुरक्षा, प्रगति और समृद्धि के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देने का संकल्प लेना चाहिए। ●

अमृत काल का ध्येय...

कर्तव्य पथ बना जीवन पथ

ताकि विकसित देश बने भारत

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के अमृत अवसर पर जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को 9वीं बार संबोधित कर रहे थे तो उसमें आज के भारत की विकास यात्रा की स्वाभाविकता समाहित थी, देश में आए सामूहिक चेतना के पुनर्जागरण की ऊर्जा भी थी। देश को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प की दृढ़ इच्छाशक्ति को मन-मस्तिष्क में संजोए उन्होंने 75 वर्ष की यात्रा से आगे बढ़ने और अमृत काल में 'पंच प्रण' से ऐसे विकसित भारत के निर्माण का संकल्प दोहराया जहां जग कल्याण से जन कल्याण की सोच हो, गुलामी के मनोभाव से मुक्त हो, अपनी विरासत पर गर्व करता भारत के हर नागरिक का कर्तव्य पथ ही बने जीवन पथ और एकता-एकजुटता के साथ हो नए भारत का निर्माण...

भारत की स्वाधीनता के 75 वर्ष यानी स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत, नए विचारों का अमृत, आत्मनिर्भरता का अमृत, भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के नए संकल्पों का अमृत। इस 15 अगस्त को अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे कर 76वें वर्ष में जब भारत प्रवेश कर रहा था, तब लाल किले की प्राचीर हो या फिर देश का हर कोना या विश्व में बसे भारतीयों के द्वारा या भारत के प्रति प्रेम रखने वालों का राष्ट्रध्वज तिरंगा के प्रति उत्साह कुछ उसी तरह था जैसा स्वाधीनता संघर्ष की गाथा को संजोए देश ने 75 वर्ष पहले देखा था। हर कोने में आन-बान-शान के साथ लहराते तिरंगे ने अमृत महोत्सव की अमिट छाप छोड़ी और यह ऐतिहासिक दिवस भारत की यात्रा का एक पुण्य पड़ाव, एक नई राह, एक नये संकल्प और नये सामर्थ्य के साथ कदम बढ़ाने का शुभ अवसर बन गया।

आजादी के इन 75 वर्षों में भारत ने हर चुनौतियों को पार किया है। 75 साल की इस यात्रा में आशाएं-अपेक्षाएं, उतार-चढ़ाव के बीच में सबके प्रयास से राष्ट्र ने अपना सफर तय किया है। वर्ष 2014 में जब देश की जनता ने आजाद भारत में जन्मे नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्र की सेवा का अवसर दिया तो उन्होंने लाल किले की प्राचीर हो या फिर राष्ट्र से जुड़े सामाजिक-नीतिगत-आर्थिक फैसले, दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया। अपने जीवन का एक लंबा कालखंड उन्होंने समाज के भीतर गरीब से गरीब तक को सशक्त करने में लगा दिया। दलित हो, शोषित हो, पीड़ित हो, वंचित हो, आदिवासी हो, महिला हो, युवा हो, किसान हो, दिव्यांग हो, पूर्व हो, पश्चिम हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, समुद्र का तट हो, हिमालय की कन्दराएं हो, हर कोने में महात्मा गांधी का जो सपना था- आखिरी व्यक्ति की चिंता करने का, अंतिम छोर पर बैठे हुए व्यक्ति को समर्थ बनाने का, उसके लिए ही खुद को समर्पित किया। इन 8 वर्षों की दीर्घकालिक सोच के साथ सुशासन का ही परिणाम है कि आजादी के इतने दशकों के अनुभव के बाद जब भारत अपने अमृत काल की ओर कदम रख रहा है, तब वह एक ऐसे सामर्थ्य को देख रहा है जिससे मन में गर्व होना स्वाभाविक है। जिस तरह से बीते कुछ वर्षों में देश का जन-मन शासन की नीतियों से जुड़ा है और नई सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण हुआ है, उससे भारत अब विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। अमृत काल की विकास यात्रा से भारत को विकसित बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से ऐसी खींची लकीर...

राष्ट्र नायकों को नमन...

प्रधानमंत्री मोदी ने अमृत वर्ष में उन महान सेनानियों का स्मरण कर भारत के उस सामर्थ्य की अनुभूति कराई, जिसने कभी सूरज अस्त नहीं होने वाली अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध राष्ट्र के चेतनमन को किया था तैयार...

- आजादी की जंग में गुलामी का पूरा कालखंड संघर्ष में बीता है। हिंदुस्तान का कोई कोना ऐसा नहीं था, कोई काल ऐसा नहीं था, जब देशवासियों ने सैकड़ों सालों तक गुलामी के खिलाफ जंग न लड़ी हो। जीवन न खपाया हो, यातनाएं न झेली हो, आहूति न दी हो। आज हम सब देशवासियों के लिए ऐसे हर महापुरूष को नमन करने का अवसर है।

- हम सभी देशवासी कृतज्ञ है, पूज्य बापू के, नेता जी सुभाष चंद्र बोस के, बाबा साहेब अंबेडकर के, वीर सावरकर के, जिन्होंने कर्तव्य पथ पर जीवन को खपा दिया। कर्तव्य पथ ही उनका जीवन पथ रहा।

- यह देश कृतज्ञ है, मंगल पांडे, तात्या टोपे, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल और अनगिनत ऐसे हमारे क्रांति वीरों का, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिला दी थी। यह राष्ट्र कृतज्ञ है, रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, दुर्गा भाभी, रानी गाइदिन्ल्यू, रानी चेनम्मा, बेगम हजरत महल और वेलु नाच्चियार जैसी उन वीरांगनाओं का, जिन्होंने बताया कि भारत की नारी शक्ति क्या होती है।

- भारत की नारी त्याग और बलिदान की क्या पराकाष्ठा कर सकती है, वैसी अनगिनत वीरांगनाओं का स्मरण करते हुए हर हिंदुस्तानी गर्व से भर जाता है। आजादी की जंग लड़ने वाले और आजादी के बाद देश बनाने वाले डॉ. राजेंद्र प्रसाद हों, नेहरू हों, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, लाल बहादुर शास्त्री, दीनदयाल उपाध्याय, जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, आचार्य विनाबा भावे, नाना जी देशमुख, सुब्रह्मण्यम भारती जैसे अनगिनत महापुरुषों को आज नमन करने का अवसर है।

> ये देश का सौभाग्य रहा है कि आजादी की जंग में एक रूप वो भी था जिसमें नारायण गुरू, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंदो, गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर जैसे अनेक महापुरुष हिंदुस्तान के हर कोने में, हर गांव में भारत की चेतना को जगाते रहे। भारत को चेतनमन बनाते रहे।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

लोकतंत्र की जननी भारत का अनमोल सामर्थ्य

अंग्रेज कहकर गए थे हमारे जाने के बाद देश तुम्हारा बिखर जाएगा, नहीं सोचा था उन्होंने कि भारत विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र के रूप में निखर जाएगा। लेकिन सबका प्रयास बन गया भारत का अनमोल सामर्थ्य...

- **आंतकवाद ने डगर-डगर चुनौतियां पैदा कीं, निर्दोष नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। छद्म युद्ध चलते रहे, प्राकृतिक आपदाएं आती रहीं, सफलता-विफलता, आशा-निराशा, न जाने कितने पड़ाव आए हैं। लेकिन इन पड़ाव के बीच भी भारत आगे बढ़ता रहा है।**

> हम उन जंगलों में जीने वाले हमारे आदिवासी समाज का भी गौरवगान करना नहीं भूल सकते हैं। भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धू-कान्हू, अल्लूरी सीताराम राजू, गोविंद गुरू, ऐसे अनगिनत नाम हैं, जिन्होंने आजादी के आंदोलन की आवाज बनकर दूर-सुदूर जंगलों में भी मातृभूमि के लिए जीने-मरने की प्रेरणा जगाई।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

- आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो पिछले 75 साल में देश के लिए जीने मरने वाले, देश की सुरक्षा करने वाले, देश के संकल्पों को पूरा करने वाले; चाहे सेना के जवान हों, पुलिस के कर्मी हों, शासन में बैठे हुए ब्यूरोक्रेट्स हों, जनप्रतिनिधि हों, स्थानीय स्वराज की संस्थाओं के शासक-प्रशासक रहे हों, राज्यों के शासक-प्रशासक रहे हों, केंद्र के शासक-प्रशासक रहे हों... 75 साल में इन सबके योगदान को भी आज स्मरण करने का अवसर है। यह अवसर उन कोटि-कोटि नागरिकों को भी नमन करने का है, जिन्होंने 75 साल में अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बीच भी देश को आगे बढ़ाने के लिए अपने से जो हो सका, वो करने का प्रयास किया है।

- सालों के गुलामी के कालखंड ने भारत के मन को, भारतीया की भावनाओं को गहरे घाव दिए थे, गहरी चोटें पहुंचाई थीं, लेकिन उसके भीतर एक जिद भी थी, एक जिजीविषा भी थी, एक जुनून भी था, एक जोश भी था। और उसके कारण अभावों के बीच में भी, उपहास के बीच में भी और जब आजादी की जंग अंतिम चरण में थी तो देश को डराने के लिए, निराश करने के लिए, हताश करने के लिए सारे उपाय किए गए थे।

- कहते थे अगर अंग्रेज चले जाएंगे तो देश टूट जाएगा, बिखर जाएगा, लोग अंदर-अंदर लड़ कर मर जाएंगे, कुछ नहीं बचेगा, अंधकार युग में भारत चला जाएगा, न जाने क्या- क्या आशंकाएं व्यक्त की गई थीं। लेकिन उनको पता नहीं था ये हिंदुस्तान की मिट्टी है, इस मिट्टी में वो सामर्थ्य है, जो शासकों से भी परे सामर्थ्य का एक अंतरप्रभाव लेकर जीता रहा है, सदियों तक जीता रहा है।

भारत का जनमन आकांक्षित जनमन

भारत का समाज जागृत है और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए तत्पर भी। वह चुनौतियों से जूझना भी जानता है और नए समाधान देना भी। अमृत काल की सुबह आकांक्षी समाज के लिए सुनहरा अवसर लेकर आई है...

- मैं आज देश का सबसे बड़ा सौभाग्य ये देख रहा हूं कि भारत का जनमन आकांक्षित जनमन है। आकांक्षी समाज किसी भी देश की बहुत बड़ी अमानत होती है। और हमें गर्व है कि आज हिंदुस्तान के हर कोने में, हर समाज के हर वर्ग में, हर तबके में, आकांक्षाएं उफान पर हैं।

- देश का हर नागरिक चीजें बदलना चाहता है, बदलते देखना चाहता है, लेकिन इंतजार करने को तैयार नहीं है, अपनी आंखों के सामने देखना चाहता है, कर्तव्य से जुड़ कर करना चाहता है। वो गति चाहता है, प्रगति चाहता है। 75 साल में संजोए हुए सारे सपने अपनी ही आंखों के सामने पूरा करने के लिए वो लालायित है, उत्साहित है, उतावला भी है।

- जब समाज आकांक्षी होता है तब सरकारों को भी तलवार की धार पर चलना पड़ता है। सरकारों को भी समय के साथ दौड़ना पड़ता है और मुझे विश्वास है चाहे केंद्र सरकार हो, राज्य सरकार हो, स्थानीय स्वराज्य की संस्थाएं हों, किसी भी प्रकार की शासन व्यवस्था क्यों न हो, हर किसी को इस आकांक्षी समाज की पूर्ति करनी होगी। उनकी आकांक्षाओं के लिए हम ज्यादा इंतजार नहीं कर सकते। इसलिए ये अमृत काल का पहला प्रभात उस आकांक्षी समाज की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बहुत बड़ा सुनहरा अवसर लेकर आई है।

> अब जब राजनीतिक स्थिरता हो, नीतियों में गतिशीलता हो, निर्णयों में तेजी हो, सर्वव्यापकता हो, सर्वसमावेशिता हो, तो विकास के लिए हर कोई भागीदार बनता है। सबका साथ, सबका विकास का मंत्र लेकर हम चले थे, लेकिन देखते ही देखते देशवासियों ने सबका विश्वास और सबके प्रयास से उसमें और रंग भर दिए हैं।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

सामूहिक शक्ति से दुनिया की उम्मीद भारत

भारत में नई सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण नए भारत की ही नहीं, दुनिया के लिए भी उम्मीद बनकर उभरा है क्योंकि नीतियों का सामर्थ्य और उसके प्रति भरोसे को भारत ने बढ़ाया है...

- **130 करोड़ देशवासियों ने कई दशकों के अनुभव के बाद स्थिर सरकार का महत्व क्या होता है, राजनीतिक स्थिरता का महत्व क्या होता है, राजनीतिक स्थिरता दुनिया में किस प्रकार की ताकत दिखा सकती है, इसे समझा है।**

> आजादी के इतने दशकों के बाद पूरे विश्व का भारत की तरफ देखने का नजरिया बदल चुका है। विश्व भारत की तरफ गर्व से देख रहा है, अपेक्षा से देख रहा है। समस्याओं का समाधान भारत की धरती पर दुनिया खोजने लगी है। विश्व का यह बदलाव, विश्व की सोच में यह परिवर्तन 75 साल की हमारी अनुभव यात्रा का परिणाम है।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

- हमने पिछले दिनों एक और ताकत का अनुभव किया है और वो है भारत में सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण। एक सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण आजादी के इतने संघर्ष में जो अमृत था, वो अब संजोया जा रहा है, संकलित हो रहा है। संकल्प में परिवर्तित हो रहा है, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा जुड़ रही है और सिद्धि का मार्ग नजर आ रहा है।

- चेतना का जागरण, ये पुनर्जागरण, ये हमारी सबसे बड़ी अमानत है। और ये पुनर्जागरण देखिए 10 अगस्त तक लोगों को पता तक नहीं होगा शायद कि देश के भीतर कौन सी ताकत है। लेकिन पिछले तीन दिन से जिस प्रकार से तिरंगे झंडे को लेकर तिरंगा की यात्रा को लेकर करके देश चल पड़ा है। बड़े-बड़े समाज विज्ञान के विशेषज्ञ भी शायद कल्पना नहीं कर सकते कि मेरे देश के भीतर कितना बड़ा सामर्थ है, एक तिरंगे झंडे ने दिखा दिया है। ये पुनर्चेतना, पुनर्जागरण का पल है।

- जब जनता कर्फ्यू के लिए हिंदुस्तान का हर कोना निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है। जब देश ताली, थाली बजाकर कोरोना योद्धाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होता है, तब चेतना की अनुभूति होती है। जब दीया जलाकर शुभकामनाएं देने के लिए देश निकल पड़ता है, तब उस चेतना की अनुभूति होती है।

- दुनिया कोरोना के काल खंड में वैक्सीन लेना या न लेना, वैक्सीन काम की है या नहीं है, उस उलझन में जी रही थी। उस समय मेरे देश के गांव-गरीब भी दो सौ करोड़ डोज लेकर दुनिया को चौंका देने वाला काम करके दिखा देते हैं। ये ही चेतना है, ये ही सामर्थ्य है इस सामर्थ्य ने आज देश को नई ताकत दी है।

सहकारी संघवाद, नए भारत की पहचान

राष्ट्र की प्रगति में केंद्र और राज्य का मिलकर काम करना महत्वपूर्ण है। अमृत काल में विकसित भारत बनाने को संकल्पित राष्ट्र के लिए संघीय ढांचे की भावना का सम्मान और साथ लेकर चलना ही नए भारत की आधारशिला बन सकती है...

- संघीय ढांचे की भावनाओं का आदर करते हुए हम कंधे से कंधा मिलाकर इस अमृतकाल में चलेंगे तो सपने साकार होकर रहेंगे। कार्यक्रम भिन्न हो सकते हैं, कार्यशैली भिन्न हो सकती है लेकिन संकल्प भिन्न नहीं हो सकते, राष्ट्र के लिए सपने भिन्न नहीं हो सकते।

- जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था। केंद्र में हमारे विचार की सरकार नहीं थी, लेकिन मेरे गुजरात में हर जगह पर मैं एक ही मंत्र लेकर चलता था कि भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास। भारत का विकास हम कहीं पर भी हों, हम सबके मन मस्तिष्क में रहना चाहिए।

- हमारे देश के कई राज्य हैं, जिन्होंने देश को आगे बढ़ाने में बहुत भूमिका अदा की है, नेतृत्व किया है, कई क्षेत्रों में अनुकरणीय काम किए हैं। ये हमारे संघवाद को ताकत देते हैं। लेकिन आज समय की मांग है कि सहकारी संघवाद के साथ-साथ सहकारी प्रतिस्पर्धात्मक संघवाद की है, हमें विकास की स्पर्धा की जरूरत है।

- हर राज्य को लगना चाहिए कि वो राज्य आगे निकल गया। मैं इतनी मेहनत करूंगा कि मैं आगे निकल जाऊंगा। उसने यह 10 अच्छे काम किए हैं, मैं 15 अच्छे काम कर के दिखाऊंगा। उसने तीन साल में पूरा किया है मैं दो साल में कर के दिखाऊंगा। सरकार की सभी इकाइयों के बीच में वो स्पर्धा का वातावरण चाहिए, जो हमें विकास की नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए प्रयास करे।

- **हम जिस प्रकार से संकल्प को लेकर चल पड़े है दुनिया इसे देख रही है, और आखिरकार विश्व भी उम्मीदें लेकर जी रहा है।**

- **उम्मीदें पूरी करने का सामर्थ्य कहां पड़ा है वो उसे दिखने लगा है। मैं इसे त्री- शक्ति के रूप में देखता हूं।**

> 75 साल का कालखंड कितना ही शानदार रहा हो, कितने ही संकटों वाला रहा हो, कितने ही चुनौतियों वाला रहा हो, उसके बावजूद भी आज जब हम अमृतकाल में प्रवेश कर रहे हैं अगले 25 वर्ष हमारे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें इन पंच प्रण को लेकर सारे सपने पूरे करने का जिम्मा उठा कर चलना होगा।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

पंच प्रण: 25 साल की यात्रा का अमृत मंत्र

अब जब देश संकल्पित है- 'बड़े संकल्प लेकर ही चलेगा' ऐसे में लाल किले की प्राचीर से अमृत काल के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने दिया 'पंच प्रण' का मंत्र...

- **तीन सामर्थ्य के रूप में देखता हूं, और यह त्रि-शक्ति है आकांक्षा की, पुनर्जागरण की और विश्व के उम्मीदों की। इसे पूरा करने और एक विश्वास जगाने में मेरे देशवासियों की बहुत बड़ी भूमिका है।**

1 पहला प्रण

अब देश बड़े संकल्प लेकर ही चलेगा। बहुत बड़े संकल्प लेकर चलना होगा। और वो बड़ा संकल्प है विकसित भारत, अब उससे कुछ कम नहीं होना चाहिए।

2 दूसरा प्रण

किसी भी कोने में हमारे मन के भीतर, हमारी आदतों के भीतर गुलामी का एक भी अंश अगर अभी भी कोई है तो उसको किसी भी हालत में बचने नहीं देना है। अब शत-प्रतिशत, शत-प्रतिशत सैकड़ों साल की गुलामी ने जहां हमें जकड़ कर रखा है, हमें हमारे मनोभाव को बांध कर रखा हुआ है, हमारी सोच में विकृतियां पैदा कर रखी हैं। हमें गुलामी की छोटी से छोटी चीज भी कहीं नजर आती है, हमारे भीतर नजर आती है, हमारे आस-पास नजर आती है हमें उससे मुक्ति पानी ही होगी।

3 तीसरा प्रण

हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए, हमारी विरासत के प्रति क्योंकि यही विरासत है जिसने कभी भारत को स्वर्णिम काल दिया था। और यही विरासत है जो समयानुकूल परिवर्तन करने की आदत रखती है। यही विरासत है जो काल-बाह्य छोड़ती रही है। नित्य नूतन स्वीकारती रही है। और इसलिए इस विरासत के प्रति हमें गर्व होना चाहिए।

4 चौथा प्रण

वो है एकता और एकजुटता। 130 करोड़ देशवासियों में एकता, न कोई अपना न कोई पराया, एकता की ताकत, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के सपनों के लिए हमारा चौथा प्रण है।

5 पांचवां प्रण

पांचवां प्रण है नागरिकों का कर्तव्य, जिसमें प्रधानमंत्री भी बाहर नहीं होता, मुख्यमंत्री भी बाहर नहीं होता वो भी नागरिक है। नागरिकों का कर्तव्य। ये हमारे आने वाले 25 साल के सपनों को पूरा करने के लिए एक बहुत बड़ी प्रण शक्ति है।

विकसित देशों की श्रेणी में भारत भी खड़ा होगा

आपदा को अवसर में बदलकर भारत को नई राह दिखाने की इच्छाशक्ति रखने वाले प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से दो-टूक संदेश दिया- 2047 तक भारत को दुनिया के विकसित देशों की श्रेणी में लाना है...

- आज जब अमृत काल की पहली प्रभात है, तो हमें इन 25 साल में विकसित भारत बना कर रहना है। अपनी आंखों के सामने और 20-22-25 साल के मेरे नौजवान, मेरे देश के मेरे सामने है, मेरे देश के नौजवानों जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, तब आप 50-55 के हुए होंगे। मतलब आपके जीवन का ये स्वर्णिम काल, आपकी उम्र के ये 25-30 साल भारत के सपनों को पूरा करने का काल है। आप संकल्प ले कर मेरे साथ चल पड़िए साथियों, तिरंगे झंडे की शपथ ले कर चल पड़िए, हम सब पूरी ताकत से लग जाएं। महासंकल्प, मेरा देश विकसित देश होगा, विकास के हर मापदंडों में हम मानव केंद्रित व्यवस्था को विकसित करेंगे, हमारे केंद्र में मानव होगा, हमारे केंद्र के मानव की आशा-आकांक्षाएं होंगी। हम जानते हैं, भारत जब बड़े संकल्प करता है तो करके भी दिखाता है।

- जब मैंने यहां स्वच्छता की बात कही थी मेरे पहले भाषण में, देश चल पड़ा है, जिससे जहां हो सका, स्वच्छता की ओर आगे बढ़ा और गंदगी के प्रति नफरत एक स्वभाव बनता गया है। यही तो देश है, जिसने वैक्सीनेशन, दुनिया दुविधा में थी, 200 करोड़ का लक्ष्य पार कर लिया है, ये देश कर सकता है। हमने तय किया था देश को खाड़ी के तेल पर हम गुजारा करते हैं, झाड़ी के तेल की ओर कैसे बढ़ें, 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग का सपना बड़ा लगता था। पुराना इतिहास बताता था संभव नहीं है, लेकिन समय से पहले 10 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेडिंग करके देश ने इस सपने को पूरा कर दिया है।

> अनुभव कहता है कि एक बार हम सब संकल्प ले करके चल पड़ें तो हम निर्धारित लक्ष्यों को पार कर सकते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य हो, देश में नए मेडिकल कॉलेज बनाने का इरादा हो, डॉक्टरों की तैयारी करवानी हो, हर क्षेत्र में पहले से गति बहुत बढ़ी है। इसलिए मैं कहता हूं अब आने वाले 25 साल बड़े संकल्प के हों, यही हमारा प्रण भी होना चाहिए।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

भारत की समृद्ध विरासत पर गर्व

भारत की सदियों पुरानी समृद्धशाली विरासत रही है तो आने वाले वर्षों में विकास की यात्रा भी विरासत बनेगी। आज भारत दुनिया को अपनी गौरवशाली विरासत से परिचित करा रहा है और गर्व की अनुभूति कर रहा है...

- **अब हमारी ताकत देखिए। हम वो लोग हैं जो प्रकृति के साथ जीना जानते हैं। प्रकृति को प्रेम करना जानते हैं।**
- **हमारे पास वो विरासत है, ग्लोबल वार्मिंग की समस्याओं के समाधान का रास्ता हम लोगों के पास है। हमारे पूर्वजों का दिया हुआ है।**

हम वो लोग हैं जिसने दुनिया का कल्याण देखा है, हम जग कल्याण से जन कल्याण के राही रहे हैं। जन कल्याण से जग कल्याण की राह पर चलने वाले हम लोग जब दुनिया की कामना करते हैं, तब कहते हैं- सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः। सबके सुख की बात सबके आरोग्य की बात करना यह हमारी विरासत है। यह प्रण शक्ति है हमारी, जो हमारे 25 साल के सपने पूरा करने के लिए जरुरी है।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

- हमारी विरासत पर हमें गर्व होना चाहिए। जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी तो ऊंचा उड़ेंगे, और जब हम ऊंचा उड़ेंगे तो हम विश्व को भी समाधान दे पाएंगे।श्

- आज दुनिया समग्र स्वास्थ समाधान की चर्चा कर रही है लेकिन जब इसकी चर्चा करती है तो उसकी नजर भारत के योग पर जाती है, भारत के आयुर्वेद पर जाती है, भारत के समग्र जीवनशैली पर जाती है। ये हमारी विरासत है जो हम दुनिया को दे रहे हैं। दुनिया आज उससे प्रभावित हो रही है।

- जब हम पर्यावरणीय अनुकूल जीवनशैली की बात करते हैं, हम लाइफ मिशन की बात करते हैं तो दुनिया का ध्यान आकर्षित करते हैं। हमारे पास ये सामर्थ्य है। हमारा बड़ा धान मोटा धान मिलेट, हमारे यहां तो घर-घर की चीज रही है। ये हमारी विरासत है, हमारे छोटे किसानों के परिश्रम से छोटी-छोटी जमीन के टुकड़ों में फलने-फूलने वाली हमारी धान।

- संयुक्त परिवार की एक पूंजी सदियों से हमारी माताओं-बहनों के त्याग बलिदान के कारण परिवार नाम की जो व्यवस्था विकसित हुई ये हमारी विरासत है। इस विरासत पर हम गर्व कैसे न करें। हम तो वो लोग हैं जो जीव में भी शिव देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नर में नारायण देखते हैं। हम वो लोग हैं जो नारी को नारायणी कहते हैं। हम वो लोग हैं जो पौधे में परमात्मा देखते हैं। हम वो लोग हैं जो हर कंकर में शंकर देखते हैं। ये हमारा सामर्थ्य है हर नदी में मां का रूप देखते हैं। पर्यावरण की इतनी व्यापकता विशालता ये हमारा गौरव जब विश्व के सामने खुद गर्व करेंगे तो दुनिया करेगी।

भारत प्रथम की भावना सर्वोपरि

भारत प्रथम-सदैव प्रथम की सोच जन-जन में व्याप्त है। लेकिन समाज में कुछ विकृतियां भी हैं, इस दिशा में प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से किया सामाजिक आह्वान...

- घर में भी एकता की नींव तभी रखी जाती है जब बेटा-बेटी एक समान हो। अगर बेटा-बेटी एक समान नहीं होंगे तो एकता के मंत्र नहीं गुथ सकते हैं। जेंडर इक्वैलिटी हमारी एकता में पहली शर्त है। जब हम एकता की बात करते हैं, अगर हमारे यहां एक ही पैरामीटर हो, एक ही मानदंड हो, जिस मानदंड को हम कहे इंडिया फर्स्ट मैं जो कुछ भी कर रहा हूं, जो भी सोच रहा हूं, जो भी बोल रहा हूं इंडिया फर्स्ट के अनुकूल है।

- हमें एकता से बांधने का वो मंत्र है, हमें इसको पकड़ना है। मुझे पूरा विश्वास है, कि हम समाज के अंदर ऊंच-नीच के भेदभावों से मेरे-तेरे के भेदभावों से हटकर हम सबके पुजारी बनें। श्रमेव जयते कहते हैं हम श्रमिक का सम्मान यह हमारा स्वभाव होना चाहिए।

- मैं लाल किले से मेरी एक पीड़ा और कहना चाहता हूं, यह दर्द मैं कहे बिना नहीं रह सकता। मैं जानता हूं कि शायद यह लाल किले का विषय नहीं हो सकता। लेकिन मेरे भीतर का दर्द मैं कहां कहूंगा। देशवासियों के सामने नहीं कहूंगा तो कहां कहूंगा और वो है किसी न किसी कारण से हमारे अंदर एक ऐसी विकृति आयी है, हमारी बोलचाल में, हमारे व्यवहार में, हमारे कुछ शब्दों में हम नारी का अपमान करते हैं।

- **इतने बड़े देश को उसकी विविधता को हमें सेलिब्रेट करना है, इतने पंथ और परंपराएं यह हमारी आन-बान-शान है।**

- **कोई नीचा नहीं, कोई ऊंचा नहीं है, सब बराबर हैं। कोई मेरा नहीं, कोई पराया नहीं सब अपने हैं। यह भाव एकता के लिए बहुत जरूरी है।**

> क्या हम स्वभाव से, संस्कार से, रोजमर्रा की जिंदगी में नारी को अपमानित करने वाली हर बात से मुक्ति का संकल्प ले सकते हैं। नारी का गौरव राष्ट्र के सपने पूरे करने में बहुत बड़ी पूंजी बनने वाला है। यह सामर्थ्य मैं देख रहा हूं और इसलिए मैं इस बात का आग्रही हूं।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

कर्तव्य पथ ही जीवन पथ

नागरिक कर्तव्य से कोई अछूता नहीं हो सकता। जब हर नागरिक अपने कर्तव्य को निभाएगा तो राष्ट्र अपने इच्छित लक्ष्य की सिद्धि समय से पहले कर सकता है...

- दुनिया में जिन-जिन देशों ने प्रगति की है। जिन-जिन देशों ने कुछ हासिल किया है, व्यक्तिगत जीवन में भी जिसने हासिल किया है, कुछ बातें उभर कर सामने आती हैं। एक अनुशासित जीवन, दूसरा कर्तव्य के प्रति समर्पण। व्यक्ति के जीवन की सफलता हो, समाज की हो, परिवार की हो, राष्ट्र की हो। यह मूलभूत मार्ग है, यह मूलभूत प्रणशक्ति है।

- इसलिए हमें कर्तव्य पर बल देना ही होगा। यह शासन का काम है कि बिजली 24 घंटे पहुंचाने के लिए प्रयास करे, लेकिन यह नागरिक का कर्तव्य है कि जितनी ज्यादा यूनिट बिजली बचा सकते है बचाएं। हर खेत में पानी पहुंचाना सरकार की जिम्मेदारी है, सरकार का प्रयास है, लेकिन '**per drop more crop**' पानी बचाते हुए आगे बढ़ना हर खेत से आवाज उठनी चाहिए। केमिकल मुक्त खेती, ऑर्गेनिक फार्मिंग, प्राकृतिक खेती यह हमारा कर्तव्य है।

- चाहे पुलिस हो या लोग हों, शासक हो या प्रशासक हो, यह नागरिक कर्तव्य से कोई अछूता नहीं हो सकता। हर कोई अगर नागरिक के कर्तव्यों को निभाएगा तो मुझे विश्वास है कि हम इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में समय से पहले सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

> हमारे सामूहिक सामर्थ्य को हमने देखा है। आजादी का अमृत महोत्सव जिस प्रकार से मनाया गया, जिस प्रकार से आज हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का अभियान चल रहा है, गांव-गांव के लोग जुड़ रहे हैं, कार्य सेवा कर रहे हैं। इसलिए चाहे स्वच्छता का अभियान हो, चाहे गरीबों के कल्याण का काम हो, देश आज पूरी शक्ति से आगे बढ़ रहा है।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

भ्रष्टाचार और परिवारवाद से मुक्ति

राजनीति हो या तंत्र या कोई भी संस्था, योग्यता को दरकिनार कर भ्रष्टाचार और परिवारवाद ने जगह बना ली तो समस्या का समाधान नहीं हो सकता। ऐसे में प्रधानमंत्री ने इस विकृति से मुक्ति का दिया मंत्र...

- जब मैं भाई-भतीजावाद और परिवारवाद की बात करता हूं, तो लोगों को लगता है कि मैं सिर्फ राजनीति की बात कर रहा हूं। जी नहीं, दुर्भाग्य से राजनीतिक क्षेत्र की उस बुराई ने हिंदुस्तान के हर संस्थान में परिवारवाद को पोषित कर दिया है।

- मेरे देश के नौजवानों, मैं आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए, आपके सपनों के लिए, मैं भाई-भतीजावाद के खिलाफ लड़ाई में आपका साथ चाहता हूं।

- हमने देखा पिछले दिनो खेलों में, ऐसा तो नहीं है कि देश के पास पहले प्रतिभाएं नहीं रहीं होंगी, ऐसा तो नहीं है कि खेल-कूद की दुनिया में हिंदुस्तान के नौजवान हमारे बेटे-बेटियां कुछ कर नहीं रहे। लेकिन चयन भाई-भतीजेवाद के चैनल से गुजरते थे। और उसके कारण वो खेल के मैदान तक उस देश तक तो पहुंच जाते थे, जीत-हार से उन्हें लेना-देना नहीं था। लेकिन जब पारदर्शिता आई, योग्यता के आधार पर खिलाड़ियों का चयन होने लगा पूर्ण पारदर्शिता से खेल के मैदान में सामर्थ्य का सम्मान होने लगा। आज देखिए दुनिया में खेल के मैदान में भारत का तिरंगा फहरता है। भारत का राष्ट्रगान गाया जाता है।

- गर्व होता है और परिवारवाद से मुक्ति होती है, भाई भतीजावाद से मुक्ति होती है तो यह नतीजे आते हैं।

- **देश के सामने दो बड़ी चुनौतियां : पहली चुनौती - भ्रष्टाचार दूसरी - भाई-भतीजावाद, परिवारवाद।**

- **भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खोखला कर रहा है, उससे देश को लड़ना ही होगा। हमारी कोशिश है कि जिन्होंने देश को लूटा है, उनको लौटाना भी पड़े।**

मेरे 130 करोड़ देशवासी, आप मुझे आशीर्वाद दीजिए, आप मेरा साथ दीजिए, मैं आज आप से साथ मांगने आया हूं, आपका सहयोग मांगने आया हूं ताकि मैं इस लड़ाई को लड़ पाऊं। इस लड़ाई को देश जीत पाए और समान्य नागरिक की जिंदगी भ्रष्टाचार ने तबाह करके रखी हुई है। मैं मेरे इन समान्य नागरिक की जिंदगी को फिर से आन, बान, शान के लिए जीने के लिए रास्ता बनाना चाहता हूं।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

आत्मनिर्भरता जन-जन का मंत्र

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प में आत्मनिर्भरता एक महत्वपूर्ण आधार है जो अब जन आंदोलन बन चुका है...

- **हमें आत्मनिर्भर बनना है, हमारे एनर्जी सेक्टर में। सौर क्षेत्र, पवन ऊर्जा,नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में। हमें इन व्यवस्थाओं को आगे बढ़ाना होगा।**
- **आप देखिए पीएलआई स्कीम, एक लाख करोड़ रुपया, दुनिया के लोग हिंदुस्तान में अपना नसीब आजमाने आ रहे हैं।**

आज प्राकृतिक खेती भी आत्मनिर्भरता का एक मार्ग है। आज देश में नैनो फर्टिलाइजर के कारखाने एक नई आशा लेकर के आए हैं। लेकिन प्राकृतिक खेती, केमिकल फ्री खेती आत्मनिर्भर भारत को ताकत दे सकती है। आज देश में रोजगार के क्षेत्र में ग्रीन जॉब के नए-नए क्षेत्र बहुत तेजी से खुल रहे हैं। भारत ने नीतियों के द्वारा अंतरिक्ष क्षेत्र को खोल दिया है।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

- आज महर्षि अरबिंदों की जन्म जयंती भी है। हमें उस महापुरूष को याद करना होगा जिन्होंने कहा था स्वदेशी से स्वराज, स्वराज से सुराज। यह उनका मंत्र है, हम सबको सोचना होगा कि हम कब तक दुनिया के और लोगों पर निर्भर रहेंगे। जब देश ने तय कर लिया कि हमारा पेट हम खुद भरेंगे, देश ने करके दिखाया। एक बार संकल्प लेते हैं तो होता है... और इसलिए आत्मनिर्भर भारत हर नागरिक का, हर सरकार का, समाज की हर इकाई का यह दायित्व बन जाता है। 'आत्मनिर्भर भारत', यह सरकारी एजेंडा, सरकारी कार्यक्रम नहीं है। यह समाज का जन आंदोलन है, जिसे हमें आगे बढ़ाना है।
- आजादी के 75 साल के बाद लाल किले से तिरंगे को सलामी देने का काम पहली बार मेड इन इंडिया तोप ने किया है। कौन हिंदुस्तानी होगा, जिसको यह बात, यह आवाज नई प्रेरणा, ताकत नहीं देगी।
- मेरी आत्मनिर्भरता की बात को संगठित स्वरूप में, साहस के स्वरूप में मेरी सेना के जवानों ने, सेना नायकों ने जिस जिम्मेदारी के साथ कंधे पर उठाया है। उनको आज मैं सलाम करता हूं। 300 ऐसी चीजें, जो अब हम दूसरे देशों से नहीं लेंगे। जवानों का यह प्रण छोटा नहीं है।
- जब देश के सामने चेतना जगी, मैंने सैकड़ों परिवारों से सुना है, 5-5 साल के बच्चे घर में कह रहें हैं कि अब हम विदेशी खिलौने से नहीं खेलेंगे। 5 साल का बच्चा घर में विदेशी खिलौने से नहीं खेलेगा, ये संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनकर रगों में दौड़ता है।
- आज इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का निर्माण हो, मोबाइल फोन का निर्माण हो, देश बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। जब हमारी ब्रहमोस दुनिया में जाती है, कौन हिंदुस्तानी होगा जिसका मन आसमान को न छूता होगा। आज हमारी मेट्रो कोच, हमारी वंदे भारत ट्रेन विश्व के लिए आकर्षण बन रही है।

अमृत काल का भारत और नारी शक्ति

भारत की अमृत यात्रा हर साल अपने नए लक्ष्य की ओर अग्रसर है, लेकिन हमें कैसे आगे बढ़ना है ताकि भारत का अमृत सपना हो साकार, प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से बताया...

- हमारे पास 75 साल का अनुभव है, हमने 75 साल में कई सिद्धियां भी हासिल की हैं। हमने 75 साल के अनुभव में नए सपने भी संजोए हैं, नए संकल्प भी लिए हैं। लेकिन अमृत काल के लिए हमारे मानव संसाधन का इष्टतम परिणाम कैसे मिले? हमारी प्राकृतिक संपदा का इष्टतम परिणाम कैसे हासिल हो? इस लक्ष्य को लेकर हमें चलना है।

- आपने देखा होगा, आज अदालत के अंदर देखिए हमारी वकील के क्षेत्र में काम करने वाली हमारी नारी शक्ति किस ताकत के साथ नजर आ रही है। आप ग्रामीण क्षेत्र में जनप्रतिनिधि के रूप में देखिए। हमारी नारी शक्ति किस मिजाज से समर्पित भाव से अपनी गांवों की समस्याओं को सुलझाने में लगी हुई हैं। आज ज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, विज्ञान का क्षेत्र देख लीजिए, हमारे देश की नारी शक्ति सिरमौर नजर आ रही है।

- आज हम पुलिस में देखें, हमारी नारी शक्ति लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठा रही है। हम जीवन के हर क्षेत्र में देखें, खेल-कूद का मैदान देखें या युद्ध की भूमि देखें, भारत की नारी शक्ति एक नए सामर्थ्य, नए विश्वास के साथ आगे आ रही है। मैं इसको भारत की 75 साल की यात्रा में जो योगदान है, उसमें अब कई गुना योगदान आने वाले 25 साल में देख रहा हूं। ●

- **हम इस पर जितना ध्यान देंगे, हम जितने ज्यादा अवसर हमारी बेटियों को देंगे, जितनी सुविधाएं हमारी बेटियों के लिए केंद्रित करेंगे, आप देखना वो हमें बहुत कुछ लौटाकर देंगी। वो देश को इस ऊंचाई पर ले जाएंगी।**

> इस अमृत काल में सपने पूरे करने में जो मेहनत लगने वाली है, अगर उसमें हमारी नारी शक्ति की मेहनत जुड़ जाएगी तो हमारी मेहनत कम होगी, हमारी समय सीमा भी कम हो जाएगी, हमारे सपने और तेजस्वी होंगे, और ओजस्वी होंगे, और दैदीप्यमान होंगे।
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

कैबिनेट के फैसले

पीएम आवास योजना (शहरी) अब 2024 तक रहेगी जारी

भारत सरकार सभी के पक्के आवास का सपना साकार करने के लिए कृत संकल्पित है। साथ ही, भारत को हर क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार के इस प्रयास की झलक केंद्रीय मंत्रिमंडल के हालिया फैसले में भी देखी गई जिसमें प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू) को दिसंबर 2024 तक जारी रखने और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर फिल्म निर्माण का रास्ता साफ करते हुए दोनों देशों के बीच ऑडियो विजुअल को-प्रोडक्शन संधि को दी गई मंजूरी...

- **फैसला - मंत्रिमंडल ने "प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू) - 'सभी के लिए आवास' मिशन" को 31 दिसंबर 2024 तक जारी रखने की मंजूरी दी।**
- **प्रभाव :** विभिन्न राज्यों द्वारा बनाए जा रहे और मंजूर किए गए आवासों की पूर्णता की मांग को ध्यान में रखते हुए सरकार ने इसे 31 दिसंबर 2024 तक बढ़ाने का फैसला किया है। इस योजना का उद्देश्य सभी पात्र शहरी लाभार्थियों को पक्के घर उपलब्ध कराना है। 31 मार्च, 2022 तक स्वीकृत 122.69 लाख मकानों का निर्माण पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराई जा रही है। देश में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सबको पक्का आवास मुहैया कराने के लिए शुरू की गई पीएमएवाई की अभी तक की प्रगति बहुत ही अच्छी रही है। 'सभी के लिए आवास' उपलब्ध कराने के इस अभियान को जून, 2015 में शुरू किया था।

- **फैसला- भारत-ऑस्ट्रेलिया के मिलकर फिल्म बनाने का रास्ता साफ, केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में दोनों देशों के बीच ऑडियो विजुअल को-प्रोडक्शन संधि मंजूर।**
- **प्रभाव :** सरकार ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के मिलकर फिल्म बनाने का रास्ता साफ कर दिया। भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच अब जल्द ही फिल्मों के मिलकर निर्माण के लिए संधि होगी। भारत अब तक 15 देशों के साथ ऐसे समझौते कर चुका है। इसके बाद भारत में शूटिंग और फिल्म निर्माण क्षेत्र में ऑस्ट्रेलिया का सहयोग बढ़ेगा। इस तरह के समझौते उन देशों के बीच होते हैं, जो एक-दूसरे के यहां फिल्मांकन से लेकर निर्माण तक की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। समझौते के तहत निजी, अर्ध सरकारी, सरकारी एजेंसियां एक साथ फिल्म निर्माण के लिए अनुबंध करती हैं। हाल के दिनों में ऑस्ट्रेलिया भारतीय फिल्मों की शूटिंग के लिए आदर्श स्थल बनकर उभरा है।

- **फैसला - मंत्रिमंडल ने यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के संविधान में निहित ग्यारहवें अतिरिक्त प्रोटोकॉल के अनुमोदन को मंजूरी दी।**
- **प्रभाव :** यह अनुमोदन भारत सरकार के डाक विभाग को भारतीय राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित अनुमोदन के प्रपत्र की प्राप्ति और इसे यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के अंतरराष्ट्रीय ब्यूरो के महानिदेशक के पास जमा करने में समर्थ बनाता है। मंत्रिमंडल का यह निर्णय वैश्विक डाक संघ के अनुच्छेद 25 और 30 में वर्णित दायित्वों को पूरा करेगा, जो सदस्य देशों द्वारा बैठक में पारित किए गए संविधान में संशोधन के जल्द से जल्द अनुमोदन का प्रावधान करता है। उल्लेखनीय है कि यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन अंतरराष्ट्रीय डाकों के आदान-प्रदान के विनियमन से संबंधित संगठन है।

अध्यात्म और सामाजिक दायित्व से गुजरात के विकास में जुड़े नए आयाम

हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है कि – स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य जीवति। यानी कि जिसके गुणधर्म, कर्तव्य जीवित रहते हैं वो जीवित रहता है, अमर रहता है। जिसके कर्म अमर होते हैं, उनकी ऊर्जा और प्रेरणा पीढ़ियों तक समाज की सेवा करती रहती है। इसी भावना के साकार होने और मानवता के प्रति समर्पण की एक सुनहरी तस्वीर गुजरात के वलसाड में 4 अगस्त को दिखी, जहां एक साथ तीन विशिष्ट परियोजनाओं की शुरुआत हुई। श्रीमद् राजचंद्र मिशन ने 500 गांवों के लाखों लोगों के लिए अत्याधुनिक सुविधा से लैस आरोग्य मंदिर (अस्पताल) बनाया है, साथ ही पशुओं के लिए अस्पताल बनाया जा रहा है और महिलाओं को स्वावलंबी बना राष्ट्र शक्ति बनाने के उद्देश्य से विशिष्ट केंद्र का भी हो रहा है निर्माण। अस्पताल का उद्घाटन और बाकी दो केंद्रों की आधारशिला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रखी।

सर्वमंगल की भावना न केवल गुजरात, बल्कि राष्ट्र और दुनिया को भी अपने विकास का सारथी बना रहा है। अमृत महोत्सव वर्ष में मानव के साथ-साथ पशु कल्याण और ग्रामीण महिलाओं के स्वावलंबन के लिए अलग से विशिष्ट केंद्र का निर्माण गुजरात के वलसाड क्षेत्र के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। अगस्त के पहले सप्ताह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वलसाड के धर्मपुर में श्रीमद राजचंद्र अस्पताल का उद्घाटन किया। यह अत्याधुनिक चिकित्सा बुनियादी ढांचे के साथ 250 बिस्तरों वाला मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल है, जो विशेष रूप से दक्षिणी गुजरात क्षेत्र के लोगों को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करेगा। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने श्रीमद् राजचंद्र पशु चिकित्सालय की आधारशिला रखी। अस्पताल पशुओं की देखभाल और रखरखाव के लिए पारंपरिक चिकित्सा के साथ-साथ समग्र चिकित्सा देखभाल प्रदान करेगा। साथ ही, प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर श्रीमद् राजचंद्र सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर वूमेन

परियोजनाओं की क्या है विशेषता

श्रीमद् राजचंद्र अस्पताल

दक्षिण गुजरात में श्रीमद् राजचंद्र जी की दिव्य प्रेरणा और पुज्य गुरुदेव श्री राकेश जी के मार्गदर्शन से 500 से अधिक गांव और लाखों ग्रामीण जनों के स्वास्थ्य के लिए 11 एकड़ में फैला 250 बेड वाला एक आरोग्य मंदिर श्रीमद् राजचंद्र अस्पताल, जहां विभिन्न तरह के उपचार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस परियोजना की लागत लगभग 200 करोड़ रुपये है। हृदय रोग, सर्जरी, किडनी, न्यूरोलॉजी, कैंसर, आईसीयू, प्रसूति, शिशु, आपतकालीन सेवा विभाग, एमआरआई, सोनोग्राफी, फिजियोथेरैपी, एक्वा थैरेपी, रोबोटिक्स तकनीक, दिव्यांग बच्चों को शुरुआत में ही सही उपचार देने की सुविधा उपलब्ध है। श्रीमद् राजचंद्र अस्पताल कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान के साथ भी जुड़ा है।

श्रीमद् राजचंद्र पशु अस्पताल

घायल और रोगों से ग्रसित प्राणियों का जीवन बचाने का एक प्रयास, श्रीमद् राजचंद्र पशु अस्पताल, 150 वार्ड की क्षमता वाला पशुओं के लिए एक अनोखा और अद्वितीय अस्पताल होगा। यह लगभग 70 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया जाएगा। यह विश्व स्तरीय उपकरणों, अत्याधुनिक सुविधाओं और कुशल चिकित्सकों की टीम से सुसज्जित है। पक्षियों से लेकर हाथी तक, भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणियों के लिए एक सक्षम अस्पताल, जहां डायलिसिस, एंडोस्कोपी, लेजर थैरैपी, ब्लड बैंक भी होगा। इस अस्पताल से इन प्राणियों की न केवल पीड़ा कम होगी, बल्कि उन्हें एक नया जीवनदान भी मिलेगा।

श्रीमद् राजचंद्र सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर वीमेन

ये विशाल प्रोडक्शन यूनिट ग्रामीण महिलाओं को स्वतंत्र और सशक्त बनाने के लिए निर्मित किया जाएगा। इसका निर्माण 40 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से होगा। ग्रामीण महिलाओं को शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए इस केंद्र में कई गतिविधियां होंगी। जैसे कि 100 से अधिक उत्पादों का उत्पादन अत्याधुनिक मशीनों द्वारा होगा। आर्थिक साक्षरता के लिए विभिन्न क्षेत्रों में वोकेशनल ट्रेनिंग भी दी जाएगी। कंप्यूटर प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता, सिलाई वर्ग, स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता, योग, मार्शल आर्ट, कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होगी।

की आधारशिला भी रखी। इसमें मनोरंजन के लिए सुविधाएं, आत्म-विकास सत्रों के लिए कक्षाएं, विश्राम क्षेत्र आदि की व्यवस्था होगी। यह 700 से अधिक आदिवासी महिलाओं को रोजगार देगा और बाद में हजारों अन्य लोगों को आजीविका प्रदान करेगा।

इन तीनों परियोजनाओं की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि श्रीमद् राजचंद्र मिशन गुजरात में ग्रामीण आरोग्य के क्षेत्र में प्रशंसनीय काम कर रहा है और गरीब की सेवा की यह प्रतिबद्धता इस नए अस्पताल से और मजबूत होगी। उन्होंने श्रीमद् राजचंद्र अस्पताल को आरोग्य का ऐसा मंदिर बताया जो अमृत काल में स्वस्थ भारत के विजन को ताकत देने वाला और सबका प्रयास की भावना को सशक्त करने वाला है। इतना ही नहीं, महिलाओं के लिए बन रहे विशिष्ट केंद्र को प्रधानमंत्री ने आदिवासी बहन-बेटियों के कौशल को निखारने और उनके जीवन को अधिक समृद्ध बनाने वाला कदम बताया। प्रधानमंत्री का कहना था कि नारी शक्ति को आजादी के अमृत काल में राष्ट्र शक्ति के रूप में लाना सबका कर्तव्य है। उनका कहना था, "देश की नारीशक्ति को आजादी के अमृतकाल में राष्ट्रशक्ति के रूप में सामने लाना हम सभी का दायित्व है। केंद्र सरकार आज बहनों-बेटियों के सामने आने वाली हर उस अड़चन को दूर करने में जुटी है, जो उसे आगे बढ़ने से रोकती है।" ●

पानीपत में 2जी इथेनॉल संयंत्र राष्ट्र को समर्पित

स्वच्छ वातावरण-समृद्ध किसान, जैव ईंधन बेहतर समाधान

प्रकृति हमें जीवन देती है और ऊर्जा हमें गतिमान रखती है। प्रकृति की पूजा करने वाले हमारे देश में बायोफ्यूल या जैविक ईंधन, प्रकृति की रक्षा का ही एक पर्याय है। हमारे लिए जैव ईंधन का मतलब है हरियाली लाने वाला ईंधन, पर्यावरण को बचाने वाला ईंधन। जैविक ईंधन प्लांट से न केवल प्रदूषण कम होता है, बल्कि पर्यावरण की रक्षा में किसानों का योगदान और बढ़ता है। साथ ही देश को एक वैकल्पिक ईंधन भी मिलता है। जैव ईंधन को बढ़ावा देने वाली इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 अगस्त को विश्व जैव ईंधन दिवस के अवसर पर, हरियाणा के पानीपत में दूसरी पीढ़ी का (2जी) इथेनॉल संयंत्र राष्ट्र को किया समर्पित...

जहां धान और गेहूं की पैदावार ज्यादा होती है, वहां पराली का पूरा इस्तेमाल नहीं हो पाता। इस समस्या का समाधान करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व जैव ईंधन दिवस के अवसर पर पानीपत में 2जी इथेनॉल संयंत्र राष्ट्र को समर्पित किया। पानीपत के इस जैविक ईंधन प्लांट से पराली को बिना जलाए भी उसका निपटारा हो पाएगा और इसके एक नहीं, दो नहीं बल्कि कई सारे फायदे एक साथ होने वाले हैं। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "पानीपत के जैविक ईंधन प्लांट से पराली का बिना जलाए भी निपटारा हो पाएगा। पराली किसानों के लिए बोझ थी, परेशानी का कारण थी, वही उनके लिए, अतिरिक्त आय का माध्यम बनेगी। पर्यावरण की रक्षा में किसानों का योगदान और बढ़ेगा तथा देश को एक वैकल्पिक ईंधन भी मिलेगा।" केंद्र सरकार की प्राथमिकताओं में किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ पेट्रोल, डीजल, गैस का विकल्प तैयार करना भी शामिल है। यह संयंत्र उसी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इतना ही नहीं इस संयंत्र की वजह

कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा में सालाना 3 लाख टन की कमी

- 2जी का मतलब है **2nd Generation** यानी दूसरी पीढ़ी। इस 2जी इथेनॉल संयंत्र का निर्माण इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा 900 करोड़ रुपये से अधिक की अनुमानित लागत से किया गया है।
- अत्याधुनिक स्वदेशी तकनीक पर आधारित, यह परियोजना सालाना लगभग तीन करोड़ लीटर इथेनॉल का उत्पादन करेगी। इसमें सालाना लगभग दो लाख टन चावल के भूसे (पराली) का उपयोग होगा। यह कचरे से धन अर्जित करने के प्रयासों की दिशा में एक नए अध्याय की शुरुआत करेगी।
- क्षेत्र के एक लाख से अधिक किसानों से सीधे कृषिगत फसलों का अवशेष प्राप्त किया जाएगा। इससे किसान सशक्त बनेंगे और उन्हें अतिरिक्त आय सृजित करने का अवसर मिलेगा।
- यह परियोजना इस संयंत्र के संचालन में शामिल लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करेगी और धान के पुआल को काटने, संभालने, भंडारण आदि के जरिए आपूर्ति श्रृंखला में अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होगा।
- पराली को जलाने में कमी के माध्यम से, यह परियोजना ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में सालाना लगभग तीन लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन के बराबर की कमी लाने में योगदान देगी, जिसे देश की सड़कों से सालाना लगभग 63,000 कारों के हटने के बराबर माना जा सकता है।

किसानों को हुआ है बहुत बड़ा लाभ

- पेट्रोल में इथेनॉल मिलाने से बीते 7-8 साल में देश के करीब 50 हजार करोड़ रुपये विदेश जाने से बचे हैं और करीब-करीब इतने ही हजार करोड़ रुपये इथेनॉल मिश्रण की वजह से हमारे देश के किसानों के पास गए हैं।
- 8 साल पहले तक देश में सिर्फ 40 करोड़ लीटर इथेनॉल का उत्पादन होता था। अब यह उत्पादन करीब 400 करोड़ लीटर है। इससे किसान, गन्ना किसानों को बहुत बड़ा लाभ हुआ है।
- पाइप से गैस के कनेक्शन का आंकड़ा 1 करोड़ को छू रहा है। देश इस लक्ष्य पर भी काम कर रहा है कि अगले कुछ वर्षों में देश के 75 प्रतिशत से ज्यादा घरों में पाइप से गैस पहुंचने लगे।

से दिल्ली-एनसीआर और पूरे हरियाणा में प्रदूषण कम करने में भी मदद मिलेगी। दरअसल, ऊर्जा की सतत आवश्यकता भारत जैसे देश के लिए बहुत जरूरी है। ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के लिए पिछले कुछ वर्षों में सशक्त प्रयास शुरू किए गए। संयंत्र का लोकार्पण, देश में जैव ईंधन के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा वर्षों से उठाए गए कदमों की एक लंबी श्रृंखला का हिस्सा है। यह ऊर्जा क्षेत्र को अधिक किफायती, सुलभ, कुशल और टिकाऊ बनाने के लिए प्रधानमंत्री के निरंतर प्रयास के अनुरूप है।

जैव ईंधन दिवस

विश्व जैव ईंधन दिवस हर साल 10 अगस्त के दिन वैसे अपरंपरागत जीवाश्म ईंधन के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है जो पारंपरिक जीवाश्म ईंधन के विकल्प के रूप में काम कर सकता है। यह दिवस 'सर रुडोल्फ डीजल' के सम्मान में मनाया जाता है। वह डीजल इंजन के आविष्कारक थे और जीवाश्म ईंधन के विकल्प के तौर पर वनस्पति तेल के प्रयोग की संभावना की भविष्यवाणी करने वाले पहले व्यक्ति थे। ●

विकास यात्रा को सार्थक बना रहा सहकारी संघवाद और सबका प्रयास

किसी भी देश की प्रगति का आधार यही है कि केंद्र और राज्य साथ मिल कर कार्य करें और निश्चित दिशा में आगे बढ़ें। इसी सोच के साथ आगे बढ़ते हुए केंद्र सरकार ने संघीय ढांचे को सार्थक और जिला स्तर तक प्रतिस्पर्धात्मक बनाते हुए विकास को बढ़ावा दिया। इसका उदाहरण देश-दुनिया ने कोविड काल में देखा और दुनिया में भी भारत की एक अच्छी छवि निर्मित हुई। सबका प्रयास और सहकारी संघवाद अब नए भारत की विकास यात्रा को गति प्रदान कर रहा है, इसी कड़ी में 7 अगस्त को नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 3टी- ट्रेड (व्यापार), टूरिज्म (पर्यटन), टेक्नोलॉजी (प्रौद्योगिकी) को बढ़ावा देने पर दिया जोर...

भारत केवल दिल्ली नहीं है –इसमें देश का हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शामिल है। सहकारी संघवाद की इसी सोच का परिणाम है कि भारत ने कोविड जैसी भयावह महामारी से निपटने में तेजी दिखाई और केंद्र-राज्य समन्वय का अनुकरणीय उदाहरण पेश किया। अब जबकि भारत अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहा है, राज्यों को चुस्त, लचीला, आत्मनिर्भर होने के साथ सहकारी संघवाद की भावना के अनुरूप 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में बढ़ने की जरूरत है। एक समावेशी भारत के निर्माण की दिशा में नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की सातवीं बैठक 7 अगस्त 2022 को हुई। इस बैठक के एजेंडे में अन्य बातों के साथ-साथ फसलों के विविधीकरण, तिलहन-दलहन तथा अन्य कृषि उपजों के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल करना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-स्कूली शिक्षा का कार्यान्वयन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-उच्च शिक्षा का कार्यान्वयन और शहरी प्रशासन शामिल था।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सहकारी संघवाद की भावना से किए गए सभी राज्यों के सामूहिक प्रयासों को आज ऐसी ताकत बताया जिसने भारत को कोविड महामारी से उबरने

में मदद की। उनका कहना था, "हर राज्य ने अपनी ताकत के अनुसार अहम भूमिका निभाई और कोविड के खिलाफ भारत की लड़ाई में योगदान दिया। इसने भारत को विकासशील देशों के लिए एक वैश्विक नेता के रूप में देखने के लिए एक उदाहरण के रूप में उभरने का मौका दिया।" पीएम ने कहा कि इसका श्रेय राज्य सरकारों को जाता है,जिन्होंने आपसी सहयोग के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओं के जमीनी स्तर पर वितरण पर ध्यान केंद्रित किया।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने की पहल में प्रधानमंत्री मोदी ने राज्यों को दुनिया भर में हर भारतीय मिशन के माध्यम से 3टी-ट्रेड (व्यापार), टूरिज्म (पर्यटन), टेक्नोलॉजी (प्रौद्योगिकी) को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उनका कहना था कि राज्यों को आयात कम कर, निर्यात बढ़ाने और इसके लिए हर राज्य में अवसरों की तलाश करने पर ध्यान देना चाहिए। उनका कहना था कि 'वोकल फॉर लोकल' किसी एक राजनीतिक दल का एजेंडा नहीं है,बल्कि एक साझा लक्ष्य है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बैठक से निकले निहितार्थ को अमृत काल के लिए राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को परिभाषित करने वाला बताया। उनका कहना था कि आज हम जो बीज बोएंगे, वह 2047 में भारत द्वारा तोड़े जाने वाले फलों को परिभाषित करेगा।

कोविड के बाद यह पहली प्रत्यक्ष गवर्निंग काउंसिल की बैठक थी। इस बैठक के एजेंडे के रुप में राष्ट्रीय प्राथमिकताओं की पहचान करने के लिए केंद्र और राज्यों के बीच महीनों विचार-मंथन और परामर्श हुआ। भारत की आजादी के 75 साल में पहली बार भारत के सभी मुख्य सचिवों ने एक जगह, एक साथ मुलाकात की और तीन दिनों तक राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। इस सामूहिक प्रक्रिया से इस बैठक का एजेंडा उभरकर सामने आया।

इस वर्ष नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल ने चार प्रमुख एजेंडों पर चर्चा की:-

1. **फसल विविधीकरण और दलहन, तिलहन तथा अन्य कृषि उपजों में आत्म-निर्भरता प्राप्त करना।**
2. **स्कूली शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का कार्यान्वयन।**
3. **उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन।**
4. **शहरी प्रशासन।**

प्रधानमंत्री ने उपरोक्त सभी मुद्दों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से भारत को आधुनिक कृषि,पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला ताकि कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर और वैश्विक मार्गदर्शक बन सकें। उन्होंने कहा कि शहरी भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए जीवन की सुगमता,पारदर्शी सेवा वितरण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर तेजी से बढ़ते शहरीकरण को कमजोरी की बजाय भारत की ताकत बनाया जा सकता है। पीएम मोदी ने 2023 में भारत के जी-20 की अध्यक्षता को लेकर कहा कि भारत सिर्फ दिल्ली नहीं- इसमें देश का राज्य व केंद्रशासित प्रदेश शामिल है। पीएम ने कहा कि जी-20 के इर्द-गिर्द एक जन आंदोलन विकसित करना चाहिए। इससे हमें देश में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं की पहचान करने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम में उपस्थित प्रत्येक मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल ने चार प्रमुख एजेंडों पर विशेष ध्यान देने के साथ अपने-अपने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की प्राथमिकताओं, उपलब्धियों और चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए इस बैठक को संबोधित किया। ●

संघीय ढांचा: संवाद और समन्वय

प्रधानमंत्री ने कोविड से निपटने के मामले में ऐतिहासिक पहल करते हुए संघीय ढांचे में सबसे अहम केंद्र-राज्य के बीच समन्वय का सेतु बनाकर सबका साथ के मंत्र को चरितार्थ करके दिखाया। कोविड के समय और अन्य अवसरों पर बैठकों में सभी मुख्यमंत्रियों की न सिर्फ राय ली गई, बल्कि राज्यों की ओर से दिए गए नोट और सलाह पर मंथन के बाद ही लॉकडाउन और अन्य पहल को जमीन पर उतारा गया। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री मोदी ने 19 मार्च 2020 को कोविड पर पहले राष्ट्र के नाम संबोधन में जनता कर्फ्यू का एलान किया, लेकिन सीधे लॉकडाउन की घोषणा नहीं की। पहले मुख्यमंत्रियों से बात की तो अगले दिन दवा उद्योग के प्रमुख लोगों से बातचीत कर युद्ध स्तर पर काम करने, कालाबाजारी रोकने के निर्देश के साथ 14 हजार करोड़ रुपये को दो परियोजना भी आगे बढ़ा दी। फिर मेडिकल समूह, आयुष चिकित्सकों, इंडस्ट्री, इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, सामाजिक संगठनों, रेडियो के आरजे, सभी राजनैतिक दलों के नेताओं, ग्राम सरपंचों, देश के खिलाड़ियों और उन सभी से सीधा संवाद किया जो इस चुनौती में राष्ट्र को अपना सक्रिय योगदान दे सकते थे। इन सभी पहल के जरिए प्रधानमंत्री की सोच लोगों को सकारात्मक संदेश देने और निराशावाद या घबराहट समाप्त करने की थी। इन सबसे प्रधानमंत्री की अपील थी कि लोगों को नौकरी से न निकालें और अपने यहां काम करने वाले लोगों को सुरक्षा का माहौल दें।

वैश्विक मंदी के साये में दुनिया, मजबूती से बढ़ रहा भारत

कोविड महामारी के संकटभरे दौर के साथ अब रूस-यूक्रेन युद्ध और बढ़ती महंगाई जहां दुनियाभर के देशों की अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती बनी हुई है तो वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था इस दौर में भी मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है। ब्लूमबर्ग के हालिया सर्वे के अनुसार दुनिया के कई देशों की अर्थव्यवस्था में मंदी की आशंका है, लेकिन केवल भारत ऐसा देश है जो इससे अभी तक अछूता है....

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लीक से हटकर चलने वाले नेता हैं। वह अलग सोचते हैं, अनोखा सोचते हैं और सबसे बड़ी बात कि उस पर अमल करते हैं और करवाते हैं। केंद्र की सत्ता में 8 साल के दौरान पीएम मोदी कई ऐसे बदलाव लेकर आए हैं, जो उससे पहले तक या तो सिर्फ कल्पनाओं में ही थे, या फिर किसी ने उनकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया था। अर्थव्यवस्था भी एक ऐसा ही क्षेत्र था, जहां सुधार सिर्फ तभी किए जाते थे, जब इसकी मजबूरी होती थी। लेकिन 2014 के बाद पहली बार अर्थव्यवस्था को औपचारिक रूप देने की शुरुआत करते हुए ऐसे कई फैसले लिए गए, जिसका फायदा दीर्घकाल में देश को मिलना है। जीएसटी, बैंकरप्सी कोड से लेकर एमएसएमई पर विशेष ध्यान, उद्योग और निवेश के लिए अनुकूल माहौल से लेकर ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए हर वह कदम उठाया गया, जिसकी जरूरत अर्थव्यवस्था को थी। नतीजा...कोविड काल में ऋणात्मक स्तर तक गिरी अर्थव्यवस्था ने दो तिमाही के बाद जो रफ्तार पकड़ी तो उसकी तरक्की की गवाही दुनिया की अर्थव्यवस्था का हाल बताने वाली हर एजेंसी ने दी।

भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती की झलक ब्लूमबर्ग के ताजा सर्वे में भी मिली है, जिसके अनुसार अगले एक साल में दुनिया के कई देशों के सामने मंदी का संकट मंडरा रहा है। सर्वे की माने तो एशियाई देशों के साथ दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं पर मंदी का खतरा बढ़ता जा रहा है। कोरोना लॉकडाउन और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण यूरोपीय देशों के साथ अमेरिका, जापान और चीन जैसे देशों में मंदी का खतरा कहीं ज्यादा है। लेकिन अच्छी बात यह है कि भारत को मंदी के खतरे से पूरी तरह बाहर बताया गया है। ब्लूमबर्ग सर्वे के अनुसार भारत ही ऐसा देश है जहां, मंदी की आशंका शून्य यानी नहीं के बराबर है। ब्लूमबर्ग सर्वे में एशिया के मंदी में जाने की संभावना 20-25 प्रतिशत है, जबकि अमेरिका के लिए यह 40 और यूरोप के लिए 50-55 प्रतिशत तक है। रिपोर्ट के अनुसार श्रीलंका के अगले वर्ष मंदी की चपेट में जाने की 85 प्रतिशत संभावना है। वहीं, मॉर्गन स्टेनली ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि 2022-23 में भारत की अर्थव्यवस्था पूरे एशिया में सबसे तेज गति से विकास करेगी।

जून में वस्तुओं का निर्यात 23.52% बढ़कर 40.13 अरब डॉलर पर पहुंचा

वित्त वर्ष 2022-23 के जून महीने में वस्तुओं का निर्यात 23.52 प्रतिशत बढ़कर 40.13 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही अप्रैल-जून में निर्यात 24.51 प्रतिशत बढ़कर 118.96 अरब डॉलर पहुंच गया।

मेड इन इंडिया उत्पादों के निर्यात में 17 प्रतिशत की वृद्धि

भारत ने जून 2022 में मेड इन इंडिया उत्पाद के निर्यात में रिकार्ड कायम किया है। जून 2021 में जहां निर्यात 32.5 अरब डॉलर था वहीं जून 2022 में 37.9 अरब डॉलर का निर्यात दर्ज किया गया। जून 2022 में निर्यात का यह आंकड़ा किसी एक माह में सर्वाधिक है। इसके साथ ही यह एक साल में 17 प्रतिशत की वृद्धि है।

जून में कोर सेक्टर के उत्पादन में भारी वृद्धि

जून में आठ कोर सेक्टर का उत्पादन 12.7 प्रतिशत बढ़ा है। जबकि एक साल पहले इसी महीने 9.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। आठ कोर सेक्टर में कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात, सीमेंट और बिजली शामिल है। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में इन आठ कोर सेक्टर की हिस्सेदारी 40.27 प्रतिशत है। सरकारी आंकड़े के अनुसार इस साल जून के महीने में कोयला उत्पादन में 31.1 प्रतिशत, बिजली उत्पादन में 15.5 प्रतिशत, सीमेंट उत्पादन में 19.4 प्रतिशत, रिफाइनरी उत्पाद में 15.1 प्रतिशत, फर्टिलाइजर उत्पादन में 8.2 प्रतिशत, स्टील उत्पादन में 3.3 प्रतिशत और प्राकृतिक गैस उत्पादन में 1.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

डॉलर के मुकाबले रु. से अधिक गिरीं मुद्राएं

रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते दुनिया भर के बाजार महंगाई की समस्या से जूझ रहे हैं। वहीं, अमेरिका के केंद्रीय फेडरल बैंक द्वारा कुछ समय पहले नीतिगत ब्याज दर बढ़ाने का असर डॉलर के मुकाबले दूसरे देशों की मुद्राओं पर पड़ा है। इन मुद्राओं में भारतीय रुपया भी शामिल है। एक समय डॉलर के मुकाबले 80 रुपये तक गिरी भारतीय मुद्रा फिर संभल रही है। 9 अगस्त तक यह 79.64 के स्तर तक लौट आया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के अनुसार, "सरकार हर स्थिति पर निगाह रखे हुए है। रिजर्व बैंक रुपये की विनिमय दर पर बहुत करीबी निगाह रखे हुए है। लेकिन अन्य मुद्राओं की तुलना में डॉलर के सामने रुपये ने कहीं बेहतर प्रदर्शन किया है।"

डॉलर के मुकाबले दूसरे देशों की मुद्राओं का हाल

2022 में डॉलर के मुकाबले रुपये में 7 प्रतिशत की गिरावट आई है। जबकि जापान की करंसी येन, यूरोप का यूरो और स्वीडन का क्रोना में डॉलर के मुकाबले औसतन इस साल 10 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई है। यही नहीं, इन मुद्राओं के मुकाबले रुपया मजबूत हुआ है।

डॉलर के मुकाबले यूरोपीय देशों की मुद्रा यूरो की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। जुलाई में डॉलर के मुकाबले यूरो में दो बार जबरदस्त गिरावट देखी गई है। जुलाई 2021 में एक डॉलर 0.84 यूरो के बराबर था। जबकि 9 अगस्त तक यह 0.98 यूरो के स्तर पर है।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले जापानी येन भी लगातार कमजोर हो रहा है। 22 जून 2022 को येन 24 साल के रिकॉर्ड निचले स्तर 136.45 प्रति डॉलर तक गिर गया था। जुलाई 2021 में जहां येन की कीमत करीब 109.98 के आसपास थी, वह जुलाई 2022 में 138.80 येन तक गिर गई। ●

नीली क्रांति

मछली उत्पादन में तेजी से बढ़ते कदम

2014 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के किसानों की आय दोगुनी करने का संकल्प उठाया तो पहली बार इसमें हरित क्रांति और श्वेत क्रांति के साथ नीली क्रांति यानी मत्स्य पालन को भी शामिल किया गया...और 10 सितंबर 2020 को 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत मत्स्य पालन के क्षेत्र में आजादी के बाद की सबसे बड़ी योजना की शुरुआत प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के रूप में की गई। उद्देश्य था, 5 साल में 20 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा के निवेश के साथ इस सेक्टर की सूरत बदलने का। दो साल में इस योजना ने मत्स्य पालन सेक्टर में उत्पादन से लेकर निर्यात तक अहम योगदान दिया है। अब बारी है इससे आगे बढ़ने की, तभी तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, "वह घड़ी आ गई है, कि नीली क्रांति को अशोक चक्र के नीले रंग में चित्रित किया जाए।"

विश्व के सबसे बड़े झींगा उत्पादक और विश्व में दूसरे सबसे बड़े मछली उत्पादक देश, भारत के मत्स्य क्षेत्र में मुनाफे की भरपूर संभावनाएं हैं। उसी उद्देश्य से 2015 में शुरू नीली क्रांति योजना और 2020 में 20 हजार 50 करोड़ रुपये के निवेश वाली प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से मछली उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो रही है। नई तकनीक, आर.ए.एस., बायोफ्लॉक और केज कल्चर जैसे नए तरीकों से मछली की उत्पादकता बढ़ाई जा रही है। योजना में मछली किसानों और कारोबार से जुड़े लोगों की सुरक्षा के लिए उनका बीमा, देश में पहली बार मछली उद्योग से जुड़े जहाजों का भी बीमा शुरू हुआ है। इसके साथ ही सजावटी मछली पालन और समुद्री खरपतवार संवर्धन से महिलाओं का सशक्तीकरण हो रहा है।

आजादी के बाद जिन सेक्टर पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया, उसमें मछली पालन का सेक्टर भी शामिल था। आजादी के बाद से 2014 तक सिर्फ 3682 करोड़ रु. का निवेश इस सेक्टर में किया गया, जबकि 2014 से 2024-25 तक पीएम मत्स्य संपदा योजना, नीली क्रांति योजना और फिशरीज इंफ्रास्ट्रक्चरल डेवलपमेंट फंड सहित 30,572 करोड़ रु. अनुमानित खर्च के साथ तेजी से काम चल रहा है। अकेले पीएमएमएसवाई से 55 लाख लोगों के लिए नए रोजगार सृजन का लक्ष्य 2025 तक रखा गया है।

भारत में मछली पालन और जलीय कृषि के लिए मौजूद क्षेत्र और विशाल संभावनाओं से संपन्न व्यवस्था का ही असर है कि सी-फूड का जो निर्यात 2020-21 में 1.15 मिलियन मीट्रिक टन था वो 2021-22 में बढ़कर 1.51 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है। भारत विश्व में 112 देशों को सी-फूड निर्यात करता है और विश्व में सी-फूड का चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2022 को "कारीगर मत्स्य पालन और जलीय कृषि के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष" के रूप में घोषित किया है। ऐसे में मछली पालन शुरू करने के लिए सब्सिडी, महिलाओं और अनुसूचित जाति को इस सेक्टर में व्यवसाय शुरू करने के लिए 60% अनुदान वाली प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का उपयोग करके नीली क्रांति को गति दें और अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार करने के साथ ही मछली उत्पादन में देश को नंबर-एक बनाने के संकल्प को ध्यान में रखकर योगदान दें।

मत्स्य पालन क्षेत्र को सनराइज सेक्टर की मान्यता

अभी तक यह किया हासिल

देश में बढ़ रहा है मत्स्य उत्पादन

2016-2017	114.31 लाख टन
2017-2018	127.04 लाख टन
2018-2019	135.73 लाख टन
2019-2020	141.64 लाख टन
2020-2021	147.25 लाख टन
2021-2022	161.87 अंतरिम

कोविड-19 महामारी के वैश्विक प्रभाव के कारण मत्स्य के निर्यात में 2020-2021 में गिरावट आई थी। उसके बाद से 2021-2022 में निर्यात 57, 586 करोड़ रुपये का रहा है। जो 2020-2021 में 43,721 करोड़ रुपये था।

देश के हर हिस्से में, मछली के व्यापार-कारोबार को ध्यान में रखते हुए, पहली बार देश में इतनी बड़ी योजना बनाई गई। आजादी के बाद इस पर जितना निवेश हुआ, उससे कई गुना ज्यादा निवेश प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना में किया जा रहा है। साथ में नीली क्रांति योजना चला रहे हैं। इन्हीं प्रयासों का नतीजा है कि देश में मछली उत्पादन के सारे रिकार्ड टूट गए हैं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री।

अब इसकी बारी

योजना में 2024-2025 तक पूरे होंगे ये बड़े लक्ष्य

- मछली उत्पादन 2018-2019 के 13.75 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़ाकर 2024-2025 में 22 मिलियन मीट्रिक टन करना।
- मछली उत्पादन में सालाना 9 फीसदी की वृद्धि करना।
- मछली निर्यात से आय 2018-2019 में 46,589 करोड़ रु. था जिसे बढ़ाकर 2024-2025 में 1 लाख करोड़ रु. यानी आय दोगुना करना।
- मछली उत्पादन के बाद होने वाले नुकसान को 20-25 फीसदी से घटाकर 10 फीसदी पर सीमित करना।
- प्रति व्यक्ति मछली की खपत 5 किलो से बढ़ाकर 12 किलोग्राम करना।

पीएमएमएसवाई से जीवन और आजीविका की सुरक्षा

- 34 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों को योजना में किया गया है शामिल। मछुआरों को लीन सीजन में मासिक 1500 रुपये की सहायता अधिकतम 3 महीने दी जाती है। पिछले दो वर्षों के दौरान 8.12 लाख मछुआरों को दी गई सहायता।
- एक हजार से अधिक बायोफ्लोक इकाइयों और 1500 से अधिक रिसक्र्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम स्वीकृत। मछली पालक किसानों को पहली बार किसान क्रेडिट कार्ड किए जा रहे हैं जारी। अभी तक करीब 88 हजार किसान कार्ड जारी और 1060 करोड़ रुपये का लोन मंजूर।
- 5 लाख रुपये का समूह बीमा कवरेज, दो साल में 27.51 लाख मछुआरों का किया गया बीमा। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से 16 लाख से अधिक मछली पालक या मछुआरे लाभान्वित। अप्रैल, 2020 से मार्च, 2022 तक 34,700 महिला लाभार्थियों के लिए करीब 1120 करोड़ रु. की परियोजनाओं को मंजूरी दी

पीएमएमएसवाई में क्या-क्या हुआ

- **10,225** हेक्टेयर तालाब क्षेत्र में जल कृषि।
- **6.77** लाख मछुआरा परिवार को सहायता।
- **3102** फुटकर मछली मार्केट और कियोस्क की शुरुआत।
- **3230** नाव बदली गईं।
- **1270** सजावटी मछली पालन इकाइयां शुरू।
- **273** गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले जहाज बढ़े।
- **16** लाख लोग अभी तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हुए लाभांवित।
- **720** मत्स्य कृषि उत्पादक संगठन बने।
- **40.65** लाख मछुआरे व मछली पालक हुए प्रशिक्षित।
- **7268** करोड़ रुपये से ज्यादा के प्रस्ताव 8 अगस्त 2022 तक मंजूर।

...ताकि मिल सके जनता और मछुआरों को उचित मूल्य की जानकारी.. राष्ट्रीय मत्स्यिकी विकास बोर्ड ने 2018 में फिश मार्केट प्राइस इंफॉर्मेशन सिस्टम शुरू किया। इसमें व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री और अंतरदेशीय मछलियों के चुनिंदा थोक व खुदरा के 88 बाजारों से भाव लेकर मछली की कीमतें रियल टाइम पर पोर्टल पर अपलोड और प्रसारित की जाती है।

किसान, व्यापारी और स्वरोजगार करने वालों के सुरक्षित भविष्य की गारंटी

विकास तभी संभव है जब देश के हर नागरिक के आज के साथ उसका कल भी सुरक्षित हो। इसी सोच के साथ केंद्र सरकार उन जरूरतमंदों को सामाजिक सुरक्षा के साथ भविष्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने का प्रयास कर रही है, जिनके बारे में पहले कभी सोचा नहीं गया। इन जरूरतमंदों में शामिल हैं, किसान, व्यापारी और स्वरोजगार वाले वह लोग, जिन्हें एक उम्र के बाद आर्थिक अनिश्चितता घेर लेती थी। प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना एवं व्यापारी और स्वरोजगार वाले व्यक्तियों के लिये राष्ट्रीय पेंशन योजना के जरिए इन्हें मिली भविष्य की मुस्कान। 12 सितंबर 2019 को शुरू की गई यह दोनों योजनाएं इस वर्ष पूरा कर रही हैं अपनी सफलता का तीसरा साल...

किसान, व्यापारी और समाज के अलग-अलग वर्गों के लिए अक्सर सरकारें योजनाएं बनाती रही हैं। यह योजनाएं उनके वर्तमान को तो संवारने का काम करती हैं, लेकिन एक उम्र के बाद जब वे मेहनत करने की स्थिति में नहीं होते, तब आर्थिक अनिश्चितता के दौर में फंस जाते हैं। यही वजह है कि किसान, व्यापारी और स्वरोजगार करने वाले इन लोगों के वर्तमान के साथ उनका भविष्य भी आर्थिक रूप से सुरक्षित हो इस सोच की शुरुआत हुई रांची में 12 सितंबर 2019 को। इस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 करोड़ लघु और सीमांत किसानों का जीवन सुरक्षित करने और ऐसे किसानों को 60 वर्ष की आयु होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये प्रति माह पेंशन उपलब्ध कराने के लिए प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना का शुभारंभ किया। उसी दिन प्रधानमंत्री ने व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना की भी शुरूआत की, जिसका उद्देश्य छोटे व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों को 60 वर्ष की आयु होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये प्रति माह पेंशन उपलब्ध कराने का है। लगभग 3 करोड़ छोटे व्यापारी इस योजना का लाभ लेकर लाभान्वित हो सकेंगे। सरकार ने व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए उनके लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना को मंजूरी दी है।

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना

- प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना स्वैच्छिक और योगदान आधारित है। 60 साल की आयु के बाद किसानों को 3,000 रुपये प्रति महीने पेंशन देने का प्रावधान किया गया है। इसके लिए किसानों को 55 से 200 रुपये प्रति महीने का

योगदान देना होगा। किसान द्वारा दी जाने वाली राशि के बराबर की धनराशि का योगदान केंद्र सरकार करेगी। योजना से जुड़ने के समय उनकी आयु के आधार पर धनराशि का निर्धारण किया गया है।

- पति और पत्नी अलग-अलग इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। भारतीय जीवन बीमा निगम को पेंशन कोष का फंड मैनेजर नियुक्त किया गया है। निगम पेंशन भुगतान के लिए जवाबदेह होगा। योगदानकर्ता की मृत्यु होने पर जीवन साथी शेष योगदान देकर योजना को जारी रख सकते हैं और पेंशन का लाभ ले सकते हैं।
- यदि पति या पत्नी योजना को जारी नहीं रखना चाहते हैं तो ब्याज सहित कुल योगदान राशि का भुगतान कर दिया जाएगा। यदि पति या पत्नी नहीं है तो नामित व्यक्ति को ब्याज सहित योगदान राशि का भुगतान कर दिया जाएगा।
- यदि लाभार्थी कम से कम 5 साल तक नियमित योगदान देते हैं और इसके बाद योजना को छोड़ना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में एलआईसी बैंक की बचत खाता ब्याज दर के आधार पर ब्याज सहित धनराशि का भुगतान करेगी।
- साझा सेवा केंद्रों के जरिये इस योजना का पंजीकरण किया जा सकता है। पंजीयन निशुल्क है। सरकार इन सेवा केंद्रों को प्रति पंजीयन 30 रुपये का भुगतान करती है। आप खुद भी रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं और इसके लिए आपको योजना की आधिकारिक वेबसाइट **maandhan.in** पर जाना होगा।
- शिकायत के समाधान के लिए एक शिकायत निवारण व्यवस्था भी बनाई गई है। जिसमें एलआईसी, बैंक और सरकार के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। किसान पेंशन योजना के लिए आधार कार्ड, आयु प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र और बैंक में खाता होना जरूरी है। ●

छोटे किसानों को लाभ

- प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना का लाभ ऐसे छोटे और सीमांत किसान ले सकते हैं जिसकी आयु 18 से 40 वर्ष के बीच हो।
- जिसके पास 2 हेक्टेयर या इससे कम की कृषि योग्य जमीन हो।

19,15,168
लाभार्थी प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना में।

51,227
राष्ट्रीय पेंशन योजना में व्यापारियों और स्वरोजगारियों के लिए। (आंकड़ा 10 अगस्त 2022 तक)

व्यापारियों और स्वरोजगारियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना

- यह पेंशन योजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूसरे कार्यकाल की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। यह योजना उन व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए है जिनका वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।
- इस योजना के तहत भावी लाभार्थियों के लिए नामांकन की सुविधा देश भर में स्थित 3.50 लाख कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है। पात्र व्यापारी इस योजना के तहत अपने नजदीकी सीएससी पर जाकर नामांकन करा सकते हैं। इसके अलावा लोग **www.maandhan.in/vyapari** पोर्टल पर जाकर भी स्वयं नामांकन कर सकते हैं।
- नामांकन के लिए लाभार्थी के पास आधार कार्ड और बैंक में खाता होना चाहिए। लाभार्थी की आयु 18 से 40 वर्ष के बीच होनी चाहिए और आयकरदाता नहीं होना चाहिए। योजना के तहत लाभार्थियों के लिए नामांकन निःशुल्क है। नामांकन स्व-प्रमाणन पर आधारित है।
- यह 18 से 40 वर्ष की आयु के व्यापारियों के लिए एक स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है। इसमें लाभार्थी की आयु 60 वर्ष होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये मासिक पेंशन देने का प्रावधान है।
- इस योजना के तहत केंद्र सरकार का मासिक अंशदान में 50% योगदान होगा और शेष 50% अंशदान लाभार्थी द्वारा किया जाएगा। मासिक योगदान को कम रखा गया है। उदाहरण के लिए, एक लाभार्थी को 29 वर्ष की आयु होने पर केवल 100 रुपये प्रति माह का छोटा सा योगदान करना होगा।

पीएम मोदी: राजनीति और राष्ट्रनीति के आदर्श

पांच दशक का सार्वजनिक जीवन और 20 वर्ष से अधिक शासन में 'सेवक' बनकर अपनी निष्ठा और राष्ट्र-समाज को नई दिशा देने की सोच के साथ आगे ले जाने की दृढ़ इच्छाशक्ति ही किसी नेतृत्वकर्ता को जन-जन का सम्मान दिलाती है। ऐसे ही व्यक्तित्व के तौर पर नए भारत की पहचान बन चुके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेवा यात्रा को लेकर प्रकाशित पुस्तक 'मोदी@20: ड्रीम्स मीट डिलीवरी' के ओडिशा चैप्टर लांच (8 अगस्त) पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उनके व्यक्तित्व के आयामों को रखा और कहा, "जब एक व्यक्ति अपने परिवार को भुलाकर, जीवन का क्षण-क्षण और शरीर का कण-कण 130 करोड़ लोगों के कल्याण के लिए समर्पित कर सकता है, तभी नरेंद्र मोदी नाम का व्यक्ति बनता है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक कर्मठ कार्यकर्ता की भांति मेहनत करते हैं, एक स्टेटसमैन की भांति देश का गौरव बढ़ाते हैं, एक टीम लीडर की भांति पूरे देश का नेतृत्व करते हैं, भावुक राजनेता की भांति संवेदनशील फैसले लेते हैं, निडर सेनापति की भांति राष्ट्ररक्षा में अडिग चट्टान की तरह खड़े रहते हैं। दीपक की लौ की तरह उर्ध्व दिशा में ही सोचते हैं।" 'मोदी@20: ड्रीम्स मीट डिलीवरी' पुस्तक को ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में लोकार्पित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जब यह बात कही तो उनका संकेत बेहद स्पष्ट था कि राष्ट्र की सेवा यात्रा में इस पड़ाव तक पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी के सार्वजनिक जीवन की यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए, लेकिन वे ठहरे नहीं। इसका कारण है कि उन्होंने राजनीति का पाठ भी राष्ट्रनीति की भाषा में पढ़कर उसे अपने जीवन का संस्कार बनाया और सर्वसमावेशी विकास की नई पटकथा तैयार की। न थमना, न थकना, न रुकना, अथक परिश्रम से आगे बढ़ते जाना। नए-नए लक्ष्य निर्धारित करना और अंतिम छोर तक उसे पहुंचाकर विकास की सशक्त गाथा लिखना। यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की अलग पहचान है, जिनका खुद का परिवार आज भी सामान्य जीवन जी रहा है क्योंकि उनके लिए 130 करोड़ से अधिक देशवासी ही उनका परिवार है।

इस पुस्तक में एक संवेदनशील नेता, सुशासन और समाज की समस्याओं को जड़ से समाप्त करने वाले समाज सुधारक व प्रशासक और जड़ों को मजबूत कर उन्हें फैलाने वाले नेता समेत प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व के अनेक आयामों का परिचय है। समारोह में केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, "मोदी@20 पुस्तक पीएम मोदी के बहुआयामी व्यक्तित्व के हर आयामों का परिचय करवाती है। उन जैसा विराट व्यक्तित्व एक पुस्तक में नहीं समा सकता।

यह हमारे देश का सौभाग्य है कि पीएम मोदी हमारे नेता हैं और भारत का नेतृत्व कर रहे हैं।" उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी हमेशा कहते हैं- "मुझे कड़ी मेहनत से कभी थकान नहीं होती बल्कि मेहनत से गरीब जनता के चेहरे पर आयी मुस्कान अत्यंत संतोष की अनुभूति करवाती है।" इस भाव के साथ मेहनत करने वाला व्यक्ति बहुत लंबे समय बाद देश को मिला है। प्रधानमंत्री मोदी एक अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं जिनके मन में देश के दलित, गरीब, आदिवासी और पिछड़े लोगों के लिए अपार संवेदनशीलता है। हर फैसला करते समय हमेशा अंत्योदय और गरीब कल्याण के अनुसार सबसे पहले गरीब की सोचना उनकी प्रकृति बन गई है।

पुस्तक लोकार्पण समारोह में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पीएम मोदी के व्यक्तित्व के बारे में जो प्रकाश डाला, उसके महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं:

- प्रधानमंत्री मोदी के अलावा इतनी सादगी के साथ जीने वाला राजनेता मैंने अपने जीवन में नहीं देखा।
- समर्थ रामदास जी की 'उपभोग शून्य स्वामी' की कल्पना को इस युग में पीएम मोदी ने चरितार्थ करने का काम किया है। इसी कारण से जनता उनका इतना सम्मान करती है।
- उनका एक स्टेट्समैन के रूप में पेरिस समझौता व दुनिया भर में योग दिवस मनाने के निर्णय को हमने देखा है।
- यह बताता है कि जब भारत का नेता आत्मविश्वास से दुनिया के मंच पर अपनी बात को रखता है तो इसकी स्वीकृति उतनी ही स्वाभाविक होती है जितनी बड़े से बड़े देश के नेता की होती है।
- प्रधानमंत्री मोदी एक ऐसे आदर्शवादी नेता हैं जो देश के हित और गौरव के अलावा किसी और बात की चिंता नहीं करते। उनका सबसे बड़ा योगदान है कि उन्होंने देश में लोकतंत्र की जड़ों को पाताल तक मजबूत करने का काम किया है।
- अगर किसी को मोदी@20 को समझना है तो इससे पहले के तीस सालों की कार्यकर्ता, स्वयंसेवक और समाजसेवक के रूप में पीएम मोदी की यात्रा को देखना और समझना बहुत जरूरी है।
- पीएम मोदी ने 30 सालों तक गुजरात और देश के हर भाग का भ्रमण किया, समाज की समस्याओं को समझा और उनके समाधान पर चिंतन किया। व्यक्तियों को परखने का भी काम किया। आपदा को अवसर में बदलने का गुण भी सीखा।
- प्रधानमंत्री मोदी एक दूरदर्शी नेता हैं जो कभी टुकड़ों में नहीं सोचते बल्कि पूरा सोचते हैं, दूर का सोचते हैं और जो सोचते हैं उसे पूरा करते हैं।

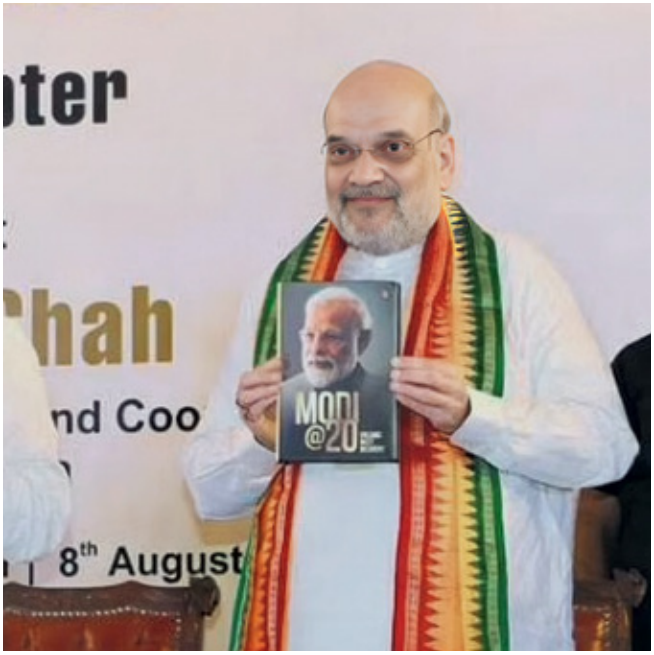

- मोदी ने तुष्टिकरण की राजनीति को भी समाप्त कर दिया, आज देश के करोड़ों गरीबों के लिए बनी योजनाओं में कोई आरोप नहीं लगा सकता कि इसके लाभार्थियों में कोई भेदभाव किया गया है, सबको एक समान लाभ मिला है।
- सुरक्षा के नाम पर दुश्मन के घर में घुसकर एयर स्ट्राइक और सर्जिकल स्ट्राइक करके दंडित करने का हौसला आज भारत के पास है।
- लाल बहादुर शास्त्री के बाद नरेंद्र मोदी पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिनकी हर बात को जनता ने सम्मान के साथ माना है।
- पीएम मोदी जो भी योजना लाते हैं उसमें जनभागीदारी का तत्व बहुत बड़ा होता है और जनभागीदारी के कारण ही उनको इतनी सफलता मिली है।
- पूरा देश यह मानता था कि जब तक अनुच्छेद 370 है तब तक कश्मीर का भारत के साथ स्थायी जुड़ाव नहीं हो सकता, 5 अगस्त 2019 की सुबह फैसला हुआ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35**A** को निष्प्रभावी कर दिया गया।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत महोत्सव को जन-जन का महोत्सव बनाया और आज बच्चा-बच्चा हाथ में तिरंगा लेकर घूमता है जिससे उसके मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जागती है।
- एक नेतृत्व में यह विजन और संकल्प तभी आता है जब उसके जीवन का क्षण-क्षण और शरीर का कण-कण केवल और केवल भारत को समर्पित होता है, प्रधानमंत्री मोदी के रूप में हम सबको ऐसा समर्पित नेता मिला है। ●

टोक्यो से बर्मिंघम तक स्वर्णिम इतिहास

स्वर्ण 22 | रजत 16 | कांस्य 23

स्क्वैश, लंबी कूद, पैदल चाल और पुरुष स्टीपलचेज में बनाया रिकार्ड

शूटिंग और तीरंदाजी के बिना 22 स्वर्ण सहित जीते 61 पदक

"कैसे खेलना है, इसके एक्सपर्ट आप हैं। मैं बस इतना कहूंगा- जी भरकर खेलिएगा, जमकर खेलिएगा, पूरी ताकत से खेलिएगा और बिना किसी टेंशन से खेलिएगा। आप सिर्फ अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर ध्यान लगाएं, बाकी चिंता देश करेगा।" बर्मिंघम जाने से पहले पीएम मोदी से मिले इस उत्साहवर्धक भरी थपकी और खेलो इंडिया के साथ टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) में मिले सहयोग का असर राष्ट्रमंडल खेल 2022 में दिखा... टॉप्स कोर ग्रुप के करीब डेढ़ दर्जन खिलाड़ियों और दोनों हॉकी टीमों ने जीते मेडल और रचा इतिहास...

राष्ट्रमंडल खेल के 19 खेलों में भारतीय दल के 215 खिलाड़ी हिस्सा लेने गए, इस बार शूटिंग और तीरंदाजी जैसे खेल शामिल नहीं होने के बावजूद 22 स्वर्ण सहित 61 पदक जीते। साथ में लॉन बॉल्स, ट्रिपल जंप, बैटमिंटन पुरुष डबल्स में स्वर्णिम इतिहास रचा तो स्क्वैश सिंगल्स में पहला भारतीय पदक, लंबी कूद में 44 साल बाद पदक, 10,000 मीटर पैदल चाल में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला, पुरुष स्टीपलचेज में केन्या का वर्चस्व तोड़ा और भाला फेंक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला का नया रिकॉर्ड कायम किया। पदकों की बात करें तो पुरुषों ने 13 स्वर्ण सहित 35 पदक, महिलाओं ने 8 स्वर्ण सहित 23 पदक और मिश्रित प्रतियोगिताओं में एक स्वर्ण सहित 3 पदक खिलाड़ियों ने जीते हैं।

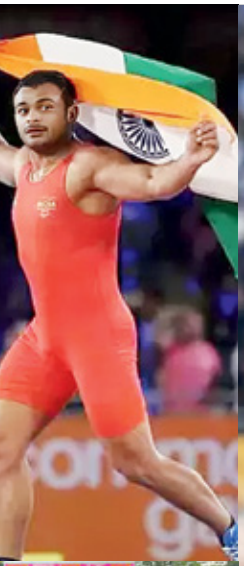

अनजान खेल 'लॉन बॉल्स' में भारत को दो पदक

राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीयों के लिए अंजान खेल 'लॉन बॉल्स' में भारत की महिला टीम ने स्वर्ण पदक और पुरुष टीम ने रजत पदक जीतकर न सिर्फ सबको आश्चर्यचकित किया बल्कि इस खेल के प्रति भारतीयों की जिज्ञासा और रूचि बढ़ाने का काम भी किया है। महिला टीम की सदस्य लवली चौबे, पिंकी, रूपा रानी और नयन मोनी सैकिया शामिल थीं, इन्होंने स्वर्ण पदक जीता तो प्रधानमंत्री मोदी ने लिखा- 'बर्मिंघम में ऐतिहासिक जीत! टीम ने बेहद निपुणता का प्रदर्शन किया है और उनकी सफलता कई भारतीयों को लॉन बॉल्स के खेल को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी।' राष्ट्रमंडल खेलों में 1930 से हिस्सा रहे इस लॉन बॉल्स खेल में पुरुषों की चौकड़ी टीम ने रजत पदक जीता। टीम के सदस्य नवनीत सिंह, चंदन कुमार सिंह, सुनील बहादुर और दिनेश कुमार थे।

10 हजार मीटर पैदल चाल में पहला पदक

यूपी की रहने वाली प्रियंका गोस्वामी ने 10 हजार मीटर की पैदल चाल में रजत पदक जीतकर अपने नाम रिकॉर्ड दर्ज करवा लिया है। पैदल चाल में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं। प्रियंका के पिता मदनपाल गोस्वामी यूपी रोडवेज में कंडक्टर थे। जब वह 14 साल की थी, तभी अचानक पिता की नौकरी चले जाने के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। 2018 में खेल कोटा से इन्हें रेलवे में नौकरी मिली तो उत्साह बढ़ा और अधिक मेहनत की। ओलंपिक में भी प्रतिनिधित्व कर चुकी लेकिन पदक नहीं मिला था।

ट्रिपल जंप में भारत का पहला स्वर्ण पदक

केरल के रहने वाले एल्डोस पॉल राष्ट्रमंडल खेलों की ट्रिपल जंप प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। वह नौसेना के जवान हैं। फाइनल मुकाबले में उन्होंने अपने तीसरे प्रयास में 17.03 मीटर की सर्वश्रेष्ठ दूरी तय की। इसी प्रतियोगिता में अब्दुल्ला अबुबकर ने 17.02 मीटर की दूरी तय करके रजत पदक जीता है।

लंबी कूद में 44 साल बाद पदक

मुरली श्रीशंकर ने 8.08 मीटर की लंबी छलांग लगाकर भारत को लंबी कूद में 44 साल बाद पदक दिलाकर नया इतिहास रचा है। इससे पहले 1978 में सुरेश बाबू ने राष्ट्रमंडल खेल में कांस्य पदक जीता था। टॉप्स योजना के कोर ग्रुप के सदस्य मुरली शंकर का सपना देश के लिए ओलंपिक मेडल जीतने का है।

स्टीपलचेज 3000 मीटर में पहली बार पदक

आर्मी मैन अविनाश साबले ने पुरुष स्टीपलचेज में केन्या का एकछत्र राज खत्म किया है। 1998 से लगातार 3000 मीटर के स्टीपचेज प्रतियोगिता में तीनों पदक जीतने वाले केन्या के खिलाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए टॉप्स कोर ग्रुप के सदस्य अविनाश साबले ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया और कॉमनवेल्थ गेम्स की इस प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल करने वाले पहले भारतीय बने।

महिला हॉकी टीम 16 साल बाद पोडियम पर

टोक्यो ओलंपिक 2020 के नजदीकी मुकाबले में कांस्य पदक से चूकने के बाद राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारतीय महिला हॉकी टीम ने कांस्य पदक अपने नाम किया। 2002 में स्वर्ण और 2006 में रजत पदक जीतने के बाद से राष्ट्रमंडल खेल में महिला हॉकी टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। विशेष बात यह है कि सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हुए मुकाबले के पेनल्टी शूटआउट में कुछ सेकेंड के लिए घड़ी बंद होने के कारण भारत को हार का सामना करना पड़ा था।

जेवलिन थ्रो (महिला): पहली बार खुला खाता

भारत के 88 साल के राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास में भाला फेंक यानी जेवलिन थ्रो में पदक जीतने वाली अन्नू रानी पहली भारतीय महिला बन गई हैं। अन्नू के पिता अमरपाल सिंह किसान हैं जिन्होंने बेटी का सपना पूरा करने के लिए डेढ़ लाख का कर्ज लेकर भाला खरीदा था। अभ्यास के लिए शुरुआती दिनों में चंदे के पैसे से अन्नू के लिए जूते भी खरीदे थे। गांव की पगडंडियों पर गन्ने का भाला बनाकर प्रैक्टिस करती थी। उनके भाई एथलीट थे जिन्होंने अपना खेल त्यागा और अन्नू को आगे बढ़ाने में जुट गए।

जिनका संघर्ष करता है प्रेरित

अचिंता वेटलिफ्टिंग के 74 किलो वर्ग में स्वर्ण पदक

टॉप्स के डेवलपमेंटल ग्रुप के सदस्य अचिंता शेउली ने वेटलिफ्टिंग में स्वर्ण पदक जीता है। इनका संघर्ष खिलाड़ियों को प्रेरित करेगा। पिता का 2013 में देहांत हो गया। आर्थिक तंगी इतनी ज्यादा था कि पिता का संस्कार करने के लिए भी पैसे नहीं थे।

हरजिंदर कौर, वेटलिफ्टिंग के 71 किलो वर्ग में कांस्य

हरजिंदर का परिवार एक कमरे के घर में रहता है। घर में 6 भैंसे पाली हुई थी। हरजिंदर खुद पशुओं के लिए चारा काटने वाली मशीन चलाती हैं। शुरुआत में प्रैक्टिस और कंपीटिशन के लिए पहले गांव में पैसे उधार लिए और फिर बैंक से 50 हजार रुपये लोन लेना पड़ा। राष्ट्रमंडल खेल में मेडल जीत लिया। 2017 में हरजिंदर स्टेट चैंपियन बनी थीं।

संघर्ष के रास्ते पर चलकर पोडियम तक पहुंचे सागर

सागर के पिता पट्टे की जमीन पर खेती करते हैं। कोरोना काल में भी अभ्यास जारी रखा। बॉक्सिंग के 92 किग्रा में वर्ग में जीता रजत पदक उनके और उनके परिवार के संघर्ष का ही परिणाम है।

और पीएम मोदी ने निभाया वादा

राष्ट्रमंडल खेलों के लिए भारतीय दल को विदा करते समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे वादा किया था कि जब वो जीतकर लौटेंगे तब मिलकर जीत का जश्न मनाएंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने वादा निभाते हुए 13 अगस्त को अपने आवास पर खिलाड़ियों से मुलाकात की जिसमें उन्होंने कहा, यह गौरव की बात है कि हमारे खिलाड़ियों की शानदार मेहनत के कारण देश एक प्रेरक उपलब्धि के साथ आजादी के अमृत काल में प्रवेश कर रहा है। राष्ट्रमंडल खेल में शानदार प्रदर्शन को लेकर प्रधानमंत्री ने कहा, "पदकों की संख्या पूरी कहानी को प्रतिबिंबित नहीं करती है क्योंकि कई पदक बहुत कम अंतर से मिलने से रह गए, जिन्हें जल्द ही निर्धारित खिलाड़ी भविष्य में फिर से हासिल करने में सफल होंगे। भारत ने पिछली बार की तुलना में 4 नए खेलों में जीत का नया मार्ग तलाश लिया है। इस प्रदर्शन से देश में युवाओं का नए खेलों के प्रति रुझान काफी बढ़ने वाला है। पदार्पण करने वाले खिलाड़ियों ने 31 पदक जीते हैं, यह युवाओं के बढ़ते आत्मविश्वास को दर्शाता है।" पीएम मोदी ने खेलो इंडिया और टॉप्स के सकारात्मक प्रभाव पर प्रसन्नता व्यक्त करके खिलाड़ियों से आगामी एशियाई खेल और ओलंपिक की अच्छी तैयारी का आग्रह किया।

"हमारे पास एक खेल इकोसिस्टम बनाने की जिम्मेदारी है जो विश्व स्तर पर उत्कृष्ट, समावेशी, विविध और गतिशील है और इसमें किसी भी प्रतिभा को पीछे नहीं छूटना चाहिए।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

दूसरों के लिए प्रेरणा बन गई जिनकी संकल्प शक्ति

भारत के इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम का कालखंड एक ऐसा दौर है जिसकी लौ निरंतर प्रज्वलित होती रहेगी और जिस पर लिखी कहानी हमेशा अमिट रहेगी। मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए हमारे देश के कई सपूतों ने अपने प्राण की बाजी लगा दी और वतन की खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। भारत अपने ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को भला कैसे भूल सकता है। आजादी के अमृत महोत्सव में हम अपने ऐसे ही स्वतंत्रता सेनानियों और महापुरुषों को याद करते हैं जिनका योगदान आज के दौर में कहीं अधिक प्रासंगिक है और जो हमें कर्तव्य पथ पर डटे रहने के लिए करते हैं प्रेरित...

आजादी का जुनून तोड़ने को कोल्हू में जोते गए थे वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई

जन्म : 5 सितंबर 1872, मृत्यु : 18 नवंबर 1936

हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी योगदान देने वाले वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई एक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने बाल गंगाधर तिलक से राजनीति का पाठ सीखा था। उनका जन्म 5 सितंबर 1872 को तमिलनाडु में हुआ था। 'वी.ओ. सी' और 'कप्पलोट्टिय तमिलन' के नाम से जाने जाने वाले पिल्लई ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1905 में बंगाल विभाजन के बाद राजनीति में प्रवेश किया था। बाल गंगाधर तिलक तथा लाला लाजपत राय द्वारा शुरू किये गए स्वदेशी आंदोलन से 1905 के अंत में ही जुड़ गए। वह रामकृष्ण मिशन की ओर भी आकर्षित हुए। चिदंबरम पिल्लई ने 'स्वदेशी प्रचार सभा' बनाकर पूरे क्षेत्र में इसका प्रसार करना शुरू कर दिया। उन्होंने बुनकर और

आजादी की संघर्ष गाथा बने महानायकों ने देखा था सपना, भारत कर रहा है साकार

दांडी यात्रा की वर्षगांठ पर 12 मार्च 2021 को जब आजादी का अमृत महोत्सव शुरू हुआ, तो उद्देश्य बेहद अमृत था। 130 करोड़ देशवासी आजादी के अमृत महोत्सव से जब जुड़ेंगे, लाखों स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेंगे तो जनसहभागिता से भारत बड़े से बड़े लक्ष्यों को पूरा करके रहेगा। आधुनिक भारत के शिल्पियों ने जो दिशा दिखाई थी, उनके एक-एक कदम के साथ देश ने छलांग लगाई। आइए आपको बताते हैं कि आजादी के 75 वर्ष की यात्रा...

निखरता चला गया लोकतंत्र

अंग्रेज कह कर गए थे हमारे जाने के बाद भारत बिखर जाएगा, लेकिन उसने शायद यह नहीं सोचा था कि भारत विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र के रूप में निखर जाएगा।

- **भारत आज दुनिया का सबसे जीवंत लोकतंत्र है।**
- **मतदान प्रतिशत 1951 में 46% होता था, अब 2019 में बढ़कर 67% पर पहुंच गया।**

भारत का जीवंत लोकतंत्र

हर तीन में से दो मतदाता करते हैं मतदान

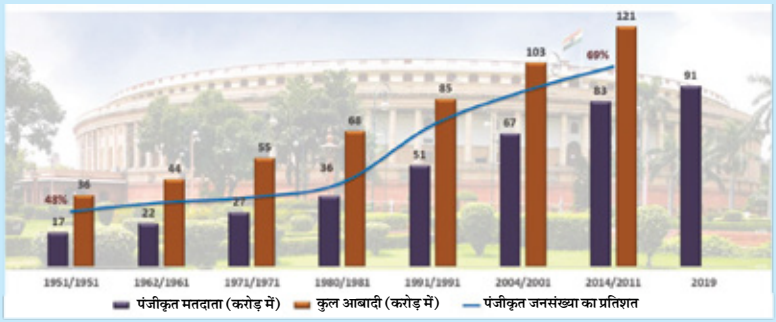

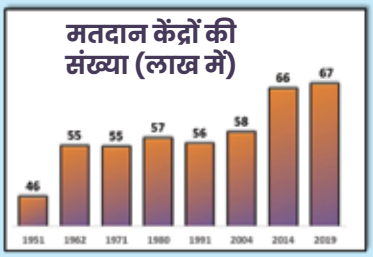

- **91.2 करोड़ पात्र मतदाताओं के साथ भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र।**
- **कुल जनसंख्या के संबंध में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत मतदाताओं की संख्या में लगातार बढ़ोतरी।**
- **मतदान केंद्रों की संख्या में 5 गुना की वृद्धि।**

*स्रोत : भारत निर्वाचन आयोग
कोविड के कारण 2021 की जनगणना अभी बाकी।

कारीगरों के लिए मद्रास एग्रो इंडियन सोसाइटी लिमिटेड स्थापित किया। इतना ही नहीं उन्होंने 'पैसा फंड' नाम से एक स्वदेशी बैंक और स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी भी शुरू की, जिससे अंग्रेजों को काफी नुकसान हो रहा था। बाद में वह सुब्रमण्यम भारती के संपर्क में आए। ऐसा माना जाता है कि महात्मा गांधी के चंपारण सत्याग्रह (1917) से पहले ही चिदंबरम पिल्लई ने तमिलनाडु में मजदूर वर्ग का मुद्दा उठाया था। चिदंबरम पिल्लई ने अन्य नेताओं के साथ मिलकर 9 मार्च, 1908 की सुबह बिपिन चंद्र पाल की जेल से रिहाई का जश्न मनाने और स्वराज का झंडा फहराने के लिये एक विशाल जुलूस निकालने का संकल्प लिया था। पिल्लई की चुनौतियों से परेशान होकर अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डाल दिया और उन पर काफी जुल्म किया गया। उनसे खदान में काम कराया गया और कहा तो यह भी जाता है कि उन्हें तेल के कोल्हू में बैल की जगह जोत दिया गया। लेखन में भी पिल्लई की गहरी रूचि रही। उन्होंने मेयाराम (1914), मेयारिवु (1915), एंथोलॉजी (1915), आत्मकथा (1946) सहित कई कृतियों की रचना की। 18 नवंबर, 1936 को चिदंबरम पिल्लई का निधन हो गया। 5 सितंबर 2021 को उनकी जन्म जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "उन्होंने हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख योगदान दिया। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत की भी परिकल्पना की थी और इसके लिए बंदरगाहों और जहाजरानी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रयास किए। वह हमारे लिए विशेष प्रेरणा के स्रोत हैं।"

अमृत काल संकल्प से सिद्धि का समय...

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' की राष्ट्रीय समिति की तीसरी बैठक को संबोधित किया।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि देश में आजादी का अमृत महोत्सव देशभक्ति के जोश का माहौल तैयार कर रहा है और यह राष्ट्र निर्माण के साथ हमारे युवाओं के भावनात्मक जुड़ाव को स्थापित करने का एक सुनहरा अवसर है।
- पीएम मोदी ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव युवाओं के लिए एक संस्कार उत्सव है, जो देश के लिए योगदान करने की खातिर उन्हें कभी न कम होने वाले जुनून से भर देगा। आज की पीढ़ी कल की लीडर होगी।
- राष्ट्रीय समिति की पहली बैठक 12 मार्च 2021 को प्रधानमंत्री द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव का शुभारंभ करने से पहले 8 मार्च 2021 को आयोजित की गई थी।
- राष्ट्रीय समिति के विभिन्न सदस्यों ने बैठक में भाग लिया, जिसमें लोकसभा अध्यक्ष, राज्यों के राज्यपाल, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, राजनीतिक नेता, अधिकारी, मीडियाकर्मी, धर्म गुरु, कलाकार, फिल्मी हस्तियां और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े व्यक्ति शामिल थे।
- देश में अब तक 60 हजार से अधिक कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं और आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर से लेकर राज्य, जिला और कोने-कोने तक पहुंच चुका है।

अर्जुन लाल सेठी : जिन्होंने बनाई थी गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना

जन्म : 9 सितंबर 1880
मृत्यु : 23 दिसंबर, 1941

देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के लिए राजस्थान के सपूत अर्जुन लाल सेठी ने लोगों में नया जोश भरा और क्रांति की अलख भी जगाई। राजस्थान में 'आजादी का पिता' के नाम से प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी और शिक्षक अर्जुन लाल सेठी का जन्म 9 सितंबर 1880 को राजस्थान के जयपुर शहर में हुआ था। 1912 में दिल्ली के चांदनी चौक में गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग के जुलूस पर बम फेंकने की योजना भी अर्जुन ने ही बनाई थी। उनका संपर्क रासबिहारी बोस, शचीन्द्र नाथ सान्याल और अमीरचंद जैसे क्रांतिकारियों से हुआ था जो देश में सशस्त्र क्रांति करना चाहते थे। उन्हें राजस्थान में सशस्त्र क्रांति की जिम्मेदारी रास बिहारी बोस ने दी थी। युवाओं में लोकप्रिय अर्जुन लाल सेठी अपने जोशीले भाषण से क्रांतिकारियों में जोश भर देते थे। इंदौर में कल्याणमल महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप में काम करते हुए अंग्रेजों ने सेठी को गिरफ्तार किया था। उन्हें 6 साल यानी 1922 तक हिरासत में रखा गया था। जेल से आने के बाद अर्जुन लाल सेठी का कार्यस्थल अजमेर हो गया। कहा जाता है कि उनके पास प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद और उनके दल के लोग मार्गदर्शन के लिए आते थे। उन्होंने मेरठ षड्यंत्र कांड के अभियुक्त शौकत उस्मानी और काकोरी कांड के फरार अभियुक्त अशफाक उल्ला खां को अपने घर में शरण दी थी। यह भी कहा जाता है कि सेठी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने क्लक्टर का पद भी ठुकरा दिया था। उनका मानना था कि अगर वे ब्रिटिश प्रशासन के तहत काम करेंगे तो राष्ट्र की आजादी के लिए काम कौन करेगा। 1923 में सेठी के पुत्र प्रकाश को गंभीर बीमारी हो गई। उन्हें एक टेलीग्राम मिला जिसमें उन्हें शीघ्र जोधपुर आने के लिए कहा गया। इस टेलीग्राम के साथ ही उन्हें एक और टेलीग्राम मिला जिसमें गतिविधियों की बैठक के लिए बंबई आने के लिए कहा गया था। बेटे का प्यार भी उन्हें कर्तव्य की राह से विचलित नहीं कर सका और वे बंबई रवाना हो गए। अर्जुन लाल सेठी का जीवन आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा। 23 दिसंबर, 1941 को उनका निधन हो गया।

भूपेंद्रनाथ दत्त : स्वामी विवेकानंद के छोटे भाई जिन्होंने विदेश में भी थामे रखी क्रांति की मशाल

जन्म : 4 सितंबर 1880
मृत्यु : 25 दिसंबर, 1961

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा समाजशास्त्री भूपेंद्रनाथ दत्त का जन्म 4 सितंबर 1880 को कोलकता में हुआ था। वे स्वामी विवेकानंद के छोटे भाई और ब्रह्म समाज के अनुयायी थे। ब्रह्म समाज ने उनकी धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं को आकार दिया था जिनमें जातिविहीन समाज में विश्वास, एकेश्वरवाद में विश्वास और अंधविश्वास के खिलाफ विद्रोह शामिल था। युवावस्था में ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए भूपेंद्रनाथ दत्त 1902 में बंगाल के क्रांतिकारी समाज में शामिल हो गए। इस अवधि के दौरान वह अरबिंदो और बारीन्द्र घोष के करीबी सहयोगी बन गए। 1906 में वे युगांतर नामक बांग्ला समाचार पत्र के संपादक भी बने जो बंगाल में क्रांतिकारी समाज का मुखपत्र था। 1907 में दत्त को ब्रिटिश पुलिस ने राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार करके एक वर्ष के लिए जेल भेज दिया। जुलाई 1908 में जेल से रिहाई के कुछ दिनों के बाद ही भूपेंद्रनाथ को पढ़ाई के लिए अमरीका भेज दिया गया। हालांकि, वह वहां भी चुप नहीं बैठ सके और राष्ट्रहित में भारतीय स्वाधीनता के लिए काम कर रहे गदर पार्टी में शामिल हो गए। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भूपेंद्रनाथ जर्मनी चले गए और वहां वह भारत की स्वाधीनता के लिए क्रांतिकारी और राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय हो गए। 1916 में वे बर्लिन में इंडियन इंडिपेंडेंस कमिटी के सचिव बने। 1921 में भूपेंद्रनाथ दत्त मास्को गए और फिर बाद में वहां से लौट कर भारत आ गए। 1930 में कराची में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन में उन्होंने भारतीय किसानों के लिए एक मौलिक अधिकार का प्रस्ताव रखा जिसे बाद में कांग्रेस कमेटी ने स्वीकार कर लिया। राजनैतिक गतिविधियों के सक्रिय सदस्य होने के कारण भूपेंद्रनाथ को ब्रिटिश पुलिस ने कई बार गिरफ्तार किया। भूपेंद्रनाथ दत्त ने समाजिक उत्थान के लिए भी काम किया। वे एक लेखक भी थे। उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति पर अनेक पुस्तकें लिखी। उन्होंने अपने बड़े भाई स्वामी विवेकानंद पर भी पुस्तक लिखी जो काफी चर्चित रही। 25 दिसंबर 1961 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की शक्ति थे शरत चंद्र बोस

जन्म : 6 सितंबर, 1889,
मृत्यु : 20 फरवरी 1950

नेताजी सुभाष चंद बोस के ट्रबल शूटर के तौर पर जाने जाने वाले उनके बड़े भाई शरत चंद्र बोस अहिंसक मूल्यों पर यकीन रखते थे। शरत चंद्र बोस ने ही सुभाष चंद बोस को वह आधार प्रदान किया जिससे उन्हें आगे बढ़ने में मदद मिली। सुभाष चंद बोस ने जब आईसीएस की परीक्षा पास करने के बाद इस्तीफा दिया तब शरत चंद्र बोस ने उनके इस निर्णय में पूरा साथ दिया था। वह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विलक्षण योद्धा थे जिन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अथक प्रयास किया। शरत चंद्र बोस का जन्म 6 सितंबर, 1889 को ओडिशा के कटक में हुआ था। 1911 में उन्होंने वकालत की पढ़ाई पूरी की और इंग्लैंड चले गए। नृपेंद्र नाथ सिरकार के मार्गदर्शन में शरत चंद्र ने बैरिस्टर के रूप में बहुत प्रसिद्धि हासिल की और भारत लौटकर वकालत आरंभ की। हालांकि, बाद में वह वकालत छोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल हो गए। तत्कालीन भारत के गृह विभाग की रिपोर्ट में उन्हें "अपने भाई सुभाष चंद्र बोस की शक्ति और कलकत्ता में सविनय अवज्ञा आंदोलन का फाइनांसर" बताया गया था। शरत चंद्र बोस का पत्रकारिता में भी योगदान रहा। उन्होंने 1929 में 'ओरिएंट प्रेस एजेंसी' नामक एक समाचार एजेंसी की स्थापना की थी। 1940 के दशक में उन्होंने "द नेशन" अखबार निकालना शुरू किया। कुछ वर्ष बाद शरत चंद्र बोस राजनीति में आ गए। उनका विश्वास था कि ऐसा कुछ नहीं है जो नैतिक रूप से गलत हो और राजनीतिक रूप से सही। यही उनका मार्गदर्शक सिद्धांत रहा। शरत चंद्र बोस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बंगाल और पंजाब के विभाजन का विरोध किया था। इसी मुद्दे पर उन्होंने जनवरी 1947 में कांग्रेस छोड़ दी और फरवरी 1947 में विरोध आंदोलन शुरु किया। 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होते ही शरत चंद्र बोस ने भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा और सिलोन के क्षेत्रीय संगठन की हिमायत की। वे एशिया के दक्षिण-पूर्वी राष्ट्रों की एकता के भी समर्थक थे। शरत चंद्र बोस सच्चे राष्ट्रवादी थे। वे विभिन्न तरीकों से आखिर तक विभाजन रोकने के प्रयास करते रहे और विभाजन के हर संभव विकल्प भी तलाशते रहे। 20 फरवरी 1950 को उनका निधन हो गया। ●

PMO India @PMOIndia
अमृतकाल के पंच-प्रण... #IDAY2022

अमृतकाल के पंच-प्रण

पहला प्रण - बहुत बड़े संकल्प लेकर चलना होगा

दूसरा प्रण - हमारे मन के भीतर गुलामी का एक भी अंश है तो उसे बचने नहीं देना है

तीसरा प्रण - हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए

चौथा प्रण - एकता और एकजुटता

पांचवां प्रण - नागरिकों का कर्तव्य

- PM Modi at the Red Fort on 15th August 2022 -

Rajnath Singh @rajnathsingh
स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आज लालक़िले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री @narendramodi ने एक विकसित भारत के निर्माण का संकल्प देश के सामने रखा है। एक ऐसा आत्मनिर्भर भारत जो पूरे सामर्थ्य के साथ विश्व का नेतृत्व करे। इस संकल्प की पूर्ति के लिए सभी को प्राण-पण से जुटने की आवश्यकता है।

Amit Shah @AmitShah
लाल किले से पीएम श्री @narendramodi जी ने अद्भुत उद्बोधन दिया। यह हर भारतीय को स्वर्णिम भारत के निर्माण में अपना योगदान देने की प्रेरणा देता है।

मोदीजी ने देश की समृद्धि के लिए हर भारतीय से संकल्पबद्ध होकर कार्य करने और विकास में बाधक चुनौतियों से एकजुट होकर लड़ने का आवाहन किया।

Nitin Gadkari @nitin_gadkari
स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज लाल किले की प्राचीर से महत्वपूर्ण उद्बोधन दिया। नए भारत के निर्माण में सभी को प्रेरणा देने वाला उनका यह उद्बोधन हर भारतीय को संकल्पबद्ध होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।
#IndependenceDay2022
#AmritMahotsav

Dr Mansukh Mandaviya @...
आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध, सशक्त और शक्तिशाली भारत बनाने के लिए हम सब प्रतिबद्ध है।

जन कल्याण से जग कल्याण के साथ आने वाले 25 वर्ष में भारत निश्चित ही विश्व शक्ति बनकर उभरेगा। आइए हम सब मिलकर प्रधानमंत्री जी की बातों का अनुसरण करें।

Parshottam Rupala @PRupala
भारत अपनी शक्ति और सामर्थ्य से विश्व फलक पर विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है।

यही विकास यात्रा को आगे बढ़ाकर नागरिकों में देशभक्ति की नई ऊर्जा का संचार कर "हर घर तिरंगा"

स्वतंत्रता दिवस : प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से लगातार नौवीं बार संबोधित किया, विकसित भारत का खाका खींचा

25 वर्षों के लिए पंच प्रण लें : मोदी

82 मिनट तक देश को संबोधित किया मोदी ने

96 मिनट तक संबोधित किया था वर्ष 2016 में

प्रधानमंत्री के पांच प्रण

पांच बड़ी बातें

प्रधानमंत्री मोदी के साफे में दिखी 'हर घर तिरंगा' अभियान की झलक

2022	2021	2020	2019	2018	2017	2016	2015	2014
82 मिनट	90 मिनट	86 मिनट	93 मिनट	83 मिनट	56 मिनट	96 मिनट	88 मिनट	65 मिनट

प्रधानमंत्री ने भाई-भतीजावाद पर करारा प्रहार किया, बोले- इस समस्या का समाधान निकालना ही होगा

भ्रष्टाचार से निर्णायक जंग जरूरी : मोदी

संबोधन

लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री मोदी ने गिनाए पांच प्रण

1. देश का बड़ा संकल्प विकसित भारत
2. गुलामी का कोई अंश न हो
3. विरासत पर गर्व होना चाहिए
4. एकता और एकजुटता
5. नागरिक का कर्तव्य

भाषण की बड़ी बातें

खिलाड़ियों ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया

कॉमनवेल्थ गेम्स | पदक विजेता

'भारत से द्विपक्षीय संबंध मजबूत करने के लिए अमेरिका प्रतिबद्ध'

खिलाड़ियों ने बढ़ाई तिरंगे की ख्याति : मोदी

पीएम ने संकेत का जाना हाल, रिकवरी के लिए जाएंगे अमेरिका

आर.एन.आई
DELHIN/2020/78812
1-15 सितंबर, 2022

न्यू इंडिया
समाचार
पाक्षिक

आरएनआई DELHIN/2020/78812, दिल्ली पोस्टल
लाइसेंस नंबर- DL (S)-1/3550/2020-22 डब्ल्यूपीपी संख्या-
U (S)-98/2020-22, posting at BPC, Meghdoot Bhawan,
New Delhi - 110001 on 26-30 advance Fortnightly
(प्रकाशन तिथि-22 अगस्त 2022, कुल पृष्ठ-56)

5 सितंबर

शिक्षक दिवस

गुरु के समान कोई नहीं

**गुरू को सिर राखिये, चलिये आज्ञा माहिं।
कहैं कबीर ता दास को, तीन लोकों भय नाहिं॥**

> एक शिक्षक कहता है- मैं क्रांति के बीज बो रहा हूं। उस समय हम कल्पना नहीं कर सकते कि शिक्षक कितना शक्तिशाली है, लेकिन वह निश्चित रूप से अपने कर्तव्य को पूरा करके आनंद प्राप्त करता है।
> - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिस बुजुर्ग के आगे हाथ जोड़कर प्रणाम करके आशीर्वाद ले रहे हैं, वो कोई और नहीं बल्कि बचपन में उन्हें ज्ञान का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक जगदीश नाइक हैं। यह पहला मौका नहीं है जब पीएम नरेंद्र मोदी ने शिक्षकों से मुलाकात करके उनका सम्मान किया है बल्कि वे जब मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने 2005 में अपने सभी शिक्षकों के सम्मान का कार्यक्रम रखा था जिसमें 27 शिक्षक आमंत्रित थे। गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल पंडित नवल किशोर शर्मा ने उस समय कहा था, "ऐसा कार्यक्रम देश में न कभी देखा न सुना।"

प्रधान संपादक:
सत्येन्द्र प्रकाश, प्रधान महानिदेशक,
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक और मुद्रक:
मनीष देसाई, महानिदेशक
केंद्रीय सूचना ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
सूचना भवन, द्वितीय तल,
नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित

मुद्रण: इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड,
एफबीडी वन कॉर्पोरेट पार्क, 10वीं मंजिल, नई दिल्ली-
फरीदाबाद बॉर्डर, एनएच-1, फरीदाबाद-121003